स्वयंभू चौबीसी विधान

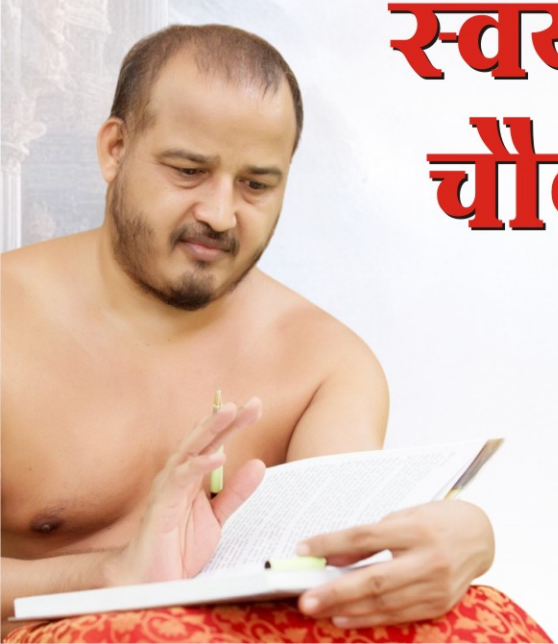

दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

श्री समन्तभद्राचार्य प्रणीत

श्री स्वयंभू चौबीसी विधान

(स्वयंभू स्तोत्र)

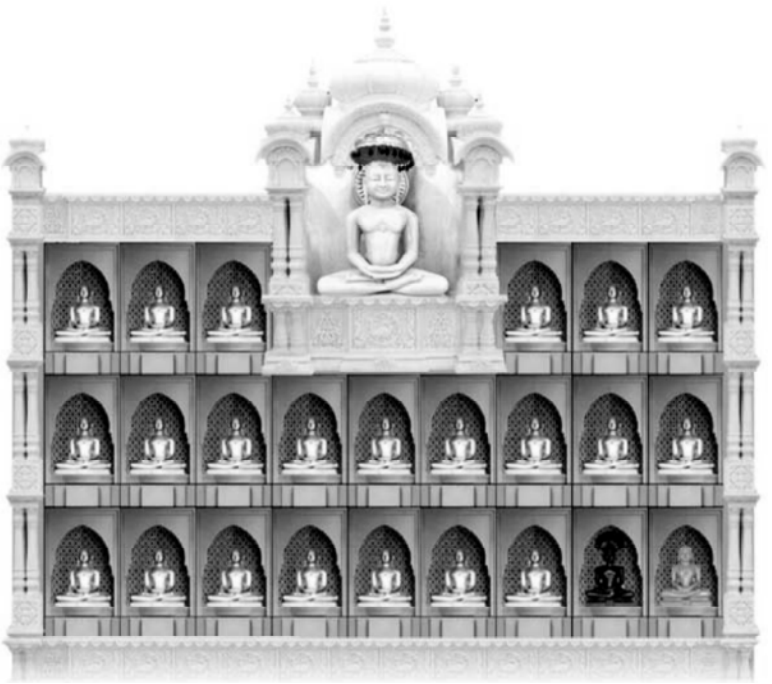

रत्नमय चौबीसी

सौरभाँचल, गन्नौर (हरियाणा)

पद्यानुवादक

दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी

कृति	:	**श्री स्वयंभू चौबीसी विधान (स्वयंभू स्तोत्र)**
शुभाशीष	:	**पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य** **गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज**
कृतिकार	:	**प.पू. दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज**
संस्करण	:	षष्ठम् जनवरी 2025 (1000 प्रतियाँ)
प्रकाशक	:	सौरभांचल प्रकाशन (क्र. 120)
प्राप्ति स्थल	:	1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,** पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.) फोन : 07270-22870
		2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,** श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा)
		3. **श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र** **जीवन आशा हॉस्पिटल** कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (गाजियाबाद)
मूल्य	:	रु. 60/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
मुद्रक	:	पारस प्रकाशन, दिल्ली मो.: 9811374961, 9811363613 pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स।।
(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वद्ढ्ढमाण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंताद्यो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"
(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा ।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं । रतिकामं शान्तिं-शान्तिं ।
बलिकामं शान्तिं-शान्तिं । क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं ।
अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं । सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं । सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं । सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं । सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं । सर्वमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं । सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं । अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं।
दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं ।
सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं ।
सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं।
सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं ।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्तीः पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु । सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु । सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु । शिवमस्तु । जयोस्तु । नित्यमारोग्यमस्तु । सर्व जीव कल्याण मस्तु। दीर्घायु रस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। धन धान्य समृद्धि रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । समृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु । सुखमस्तु । अभिवृद्धिरस्तु । दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु । सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय।।
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुब्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें।।

ॐ ह्रीं श्रीं वृषभादि वीरान्तरेभ्यः शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं *इति* ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेद्राय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकैः।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्रां णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)** अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**

7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**
8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू ह्रूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घ समर्पयामि)**
9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्षः फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**
10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**
11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलाञजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**
12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, घरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**
15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्योः नमः। **(अर्घं)**
16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्योः नमः। **(अर्घं)**
17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्योः नमः। **(अर्घं)**
18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।
20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**
22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें। मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।
23. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुनः क्षमा याचना कर विसर्जन करें।।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

आचार्य श्री सौरभ सागर जी का अर्घ्य

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

॥इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि'' की समुच्चय पूजन *

(आचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार।।5।।

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश।।6।।

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें।।7।।

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल।।8।।

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ।।9।।

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे।।10।।

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती।।11।।

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश।।12।।

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ।।13।।

दोहा- कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री स्वयंभू चौबीसी विधान

माण्डला एवं 25 ध्वजाएँ

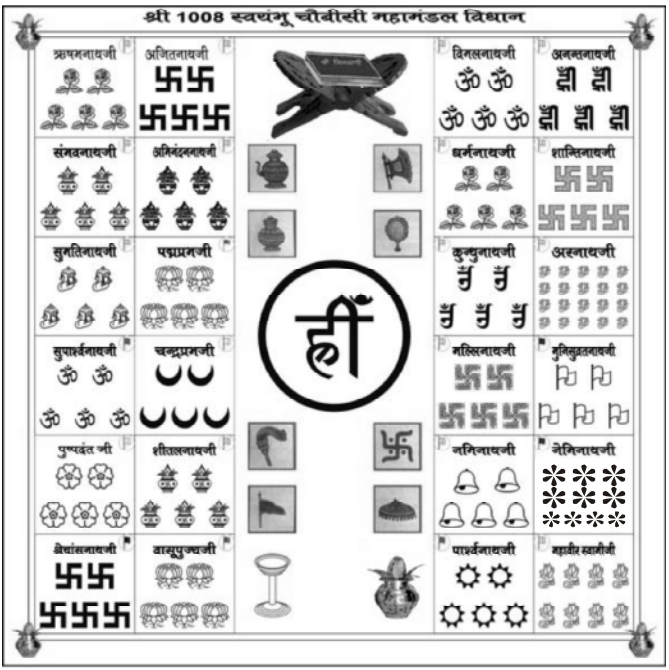

कुल अर्घ्य 170 : 25 ध्वजाएँ–16 पीली, 2 लाल, 2 सफेद, 2 काली, 2 हरी, 1 पंचरंगी

स्वयंभू चौबीसी व्रत विधि

व्रतारम्भ : किसी भी तीर्थंकर के कोई भी कल्याणक की तिथि से

अवधि : 1 वर्ष से 12 वर्ष

व्रतपूजा : व्रत वाले दिन स्वयंभू चौबीसी विधान, काव्यानुसार पूजा या जिस तीर्थंकर का कल्याणक है उनकी पूजा।

जाप : जिस तीर्थंकर का कल्याणक है उन्हीं के नाम की जाप या ॐ ह्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वृषभादिवीर पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

व्रत विधि : 143 उपवास या एकासन या 4 रस त्याग या जिस तीर्थंकर के कल्याणक पर व्रत है उन तीर्थंकर के वर्णानुसार अनाज, फल, सब्जी एवं कपड़ो का त्याग। जैसे–पार्श्वनाथ भगवान का वर्ण (रंग) हरा है तो हरी मूंग, पालक, हरे फल आदि का त्याग।

श्री स्वयंभू चौबीसी विधान प्रारम्भ

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान।।
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल।।
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा।।
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार।।
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता।।
तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥

सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी॥

पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥

विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥

कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥

नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
धर्म ध्यान बढ़ता रहे, भक्तिभाव उरधार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

अष्ट प्रातिहार्य स्थापना

तरुवर वृक्ष अशोक कहावे, सिंहासन में शोभा पावें।
तीन छत्र मस्तक पर सोहे, भामण्डल शुभ मन को मोहें॥
दिव्य ध्वनि ऊँकार स्वरूपा, गगन सुमन वृष्टि हो हर्षा।
चौंसठ चँवर विनय प्रगटावें, दुन्दुभि नाद प्रभु गुण गावें॥
प्रातिहार्य शुभ आठ सजे हैं, समवशरण कुबेर रचे हैं।
इन्द्र शतक दर्शन को आवें, नतमस्तक हो प्रभु गुण गावें॥
भक्ति से विधान रचावें, प्रातिहार्य मण्डप सजवावें।
दर्शन कर मन पावन होवें, चौबीसी विधान संजोवें॥

(मण्डलस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(अष्ट प्रातिहार्य स्थापित करें)

तद्वर्ण ध्वज अर्पण

दोहा

हेम वर्ण सम गात है, सोलह श्री भगवान।
सोलह ध्वज अर्पित करूँ, पूजोत्सव महान्॥

ॐ ह्रीं ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-शीतल-श्रेयांस-विमल-

अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अरनाथ-मल्लि-नमि-महावीर-पर्यन्त-षोडश-तीर्थंकरेभ्यो स्वर्णवर्ण-ध्वजा-समर्पयामि।

(पहले सोलह पीली ध्वजा स्थापित करें)

पद्म प्रभु सुन्दर महा, मूँगा सम तन जान।
वासूपूज्य भी लाल हैं, ध्वज अर्पित सुखखान॥

ॐ ह्रीं पद्मप्रभु-वासुपूज्य-तीर्थंकरेभ्यो रक्तवर्ण-ध्वजा-समर्पयामि।

(फिर दो लाल वर्ण की ध्वजा स्थापित करें)

चन्द्र पुष्प दो तीर्थ हैं, श्वेत वर्ण विख्यात।
ध्वज मोती सम श्वेत हैं, अर्पित क्लेश निजात॥

ॐ ह्रीं चन्द्रप्रभु-पुष्पदन्त-तीर्थंकरेभ्यो श्वेत-वर्ण-ध्वजा-समर्पयामि।

(फिर दो श्वेत ध्वजा स्थापित करें)

मुनिसुव्रत नेमि प्रभु, श्याम वर्ण नभ रूप।
श्याम घटा सी ध्वजा ले, अर्पित जिनवर भूप॥

ॐ ह्रीं मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-तीर्थंकरेभ्यो श्यामवर्ण-ध्वजा-समर्पयामि।

(दो काली ध्वजा स्थापित करें)

नाथ सुपारस पार्श्व का, हरित धरासा वर्ण।
शान्ति सदा बिखरी रहे, ध्वज अर्पित तद्वर्ण॥

ॐ ह्रीं सुपार्श्वनाथ-पार्श्वनाथ-तीर्थंकरेभ्यो हरितवर्ण-ध्वजा-समर्पयामि।

(फिर दो हरी रंग की ध्वजा स्थापित करें)

सोलह तीर्थंकर अतिप्यारे, स्वर्ण वर्ण-से हैं उजियारे।
दो काले दो हरे जिनेश्वर, गोरे दो दो लाल मनोहर॥
वर्ण ध्यान कर ध्वजा लगावे, परमेष्ठी वाचक कहलावें।
चौबीसी विधान रचावें, आशीर्वाद सदाही पावें॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंरेभ्यो पंचरंगी-धवजा-समर्पयामि।

(फिर एक पंचरंगी ध्वजा स्थापित करें)

(मण्डलस्योपरि-पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

1. श्री आदिनाथ भगवान की जय

स्वयम्भु वा भूत-हितेन भूतले,
समञ्जस-ज्ञान-विभूति-चक्षुषा।
विराजितं येन विधुन्वता तमः,
क्षपा-करेणेव गुणोत्करैः करैः॥1॥

स्वयं बोध से बोधित जिनवर, मोक्ष मार्ग को जान लिया।
सर्व प्राणी के हितकारक हैं, सम्यग् ज्ञान प्रकाश किया॥
गुण रत्नों से भूषित प्रभुवर, चन्द्र कान्ति से व्याप्त हुए।
ऋषभ नाथ हे प्रथम जिनेश्वर, कर्म काटकर आप्त हुए॥1॥

ॐ ह्रीं स्वयंबोधित-श्रीआदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रजापतिर्यः प्रथमं जिजीविषुः,
शशास कृष्यादिषु कर्मसु प्रजाः।
प्रबुद्ध-तत्त्वः पुनरद्भुतोदयो,
ममत्वतो निर्विविदे विदांवरः॥2॥

प्रजापति हे आदि जिनेश्वर, षट् कर्मों का ज्ञान दिया।
जीवन आशान्वित प्राणी को, जीने का अधिकार दिया॥
इन्द्रों सा वैभव पाकर भी, हित अहित् को जान लिया।
मोह रहित हो त्याग धारकर, निज आतम कल्याण किया॥2॥

ॐ ह्रीं षट्कर्मोपदेशक मोहरहित-श्री-आदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विहाय यः सागर-वारि-वाससं,
वधुमिवेवां वसुधा-वधूं सतीम्।
मुमुक्षुरिक्ष्वाकु-कुलादिरात्मवान्,
प्रभुः प्रवव्राज सहिष्णुरच्युतः॥3॥

इक्ष्वाकु वंशज के दाता, मोक्ष मार्ग के अनुरागी।
इन्द्रिय जेता आत्माराधक, परिषह जयते संन्यासी॥
मध्यलोक की सर्व भूमि तज, मोक्ष मार्ग पर गमन किया।
यम नियम व्रत से अच्युत हो, जिन दीक्षा को ग्रहण किया॥3॥

ॐ ह्रीं इक्ष्वाकुवंश-प्रणेता-मोक्षमार्ग-निर्माता-श्री-आदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-दोष-मूलं स्व-समाधि-तेजसा,
निनाय यो निर्दय-भस्मसात्क्रियाम्।
जगाद तत्त्वं जगतेऽर्थिनेऽञ्जसा,
बभूव च ब्रह्म-पदा-मृतेश्वरः॥4॥

शुक्लध्यान की वह्नि लेकर, निर्दयता से कर्म जला।
दोष मुक्त सब कर्म नाशकर, दिव्यज्ञान का वृक्ष फला॥
भव्य जीव को सप्त तत्व का, हितकारी उपदेश दिया।
आत्म स्वरूप में स्थिर होकर, सिद्धशिला प्रवेश किया॥4॥

ॐ ह्रीं कर्मनाशक-धर्मोपदेशक-श्री-आदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स विश्व-चक्षुर्वृषभोऽर्चितः सतां,
समग्र-विद्याऽऽत्म-वपुर्निरञ्जनः।
पुनातु चेतो मम नाभिनन्दनो,
जिनोऽजित-क्षुल्लक-वादि-शासनः॥5॥

विश्व चक्षु हे जगतपूज्य, हे सर्व विद्या से युक्त जिनेश।
कर्म जयी हे आत्मान्वेषी, अन्तिम कुलकर के पुत्रेश॥
ध्वंस किया एकान्तवाद को, जिन शासन चारित्र धरो।
आदिनाथ की कोटि वन्दना, मम हृदय को पवित्र करो॥5॥

ॐ ह्रीं मिथ्यामतनाशक-सम्यकमत-प्रकाशक-श्री-आदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार॥

ॐ ह्रीं श्री-आदिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. श्री अजितनाथ भगवान की जय

यस्य प्रभावात् त्रिदिवच्युतस्य,
क्रीडास्वपि क्षीवमुखारविन्दः।
अजेय-शक्तिर्भुवि बन्धुवर्ग
श्चकार नामाऽजित इत्यबन्ध्यम्॥1॥

भूमण्डल की सारी शक्ति, अजितनाथ सम्मुख आई।
बंधु वर्ग को क्रीड़ा में भी, मुख पुलकित कर हर्षाई।।
स्वर्ग लोक से धरती पर आ, मोह जीत कर अजित हुए।
एक सौ सत्तर तीर्थंकर सह, ढाई द्वीप में नमित हुए।।1।।

ॐ ह्रीं एकसौसत्तर-तीर्थंकर-सह-अढाईद्वीप-मध्ये विराजमान-अजितनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अद्यापि यस्याजितशासनस्य,
सतां प्रणेतुः प्रतिमंगलार्थम्।
प्रगृह्यते नाम परं पवित्रं,
स्वसिद्धि-कामेन जनेन लोके।।2।।

भव्य जीव के मंगल कर्ता, अनेकान्त शासन नायक।
मिथ्यावाद को दूर भगाकर, बन गए चिदानन्द ज्ञायक।।
नाम आपका परम पवित्रा, सादर भक्त ग्रहण करते।
आत्म सिद्धि के हेतु भविजन, रात-दिवस सुमिरन करते।।2।।

ॐ ह्रीं मिथ्यामतनिवारक-आत्मसिद्धिकारक-श्री-अजितनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यः प्रादुरासीत्-प्रभु-शक्ति-भूम्ना,
भव्याऽऽ शयालीन-कलङ्क-शान्त्यै।
महामुनिर्मुक्त - घनोपदेहो,
यथाऽरविन्दाभ्युदयाय भास्वान्।।3।।

अन्तरमन की कर्म कालिमा, वाणी तेरी दूर करें।
गज चिन्हांकित अजितनाथ की, शिक्षा गुण भरपूर भरें।।
मेघ युक्त हो सूरज जैसे, अपनी किरणें फैलाता।
परस मात्र से सरस कमल ज्यों, पल भर में ही खिल जाता।।3।।

ॐ ह्रीं मोक्षमार्गप्रकाशक-श्री-अजितनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

येन प्रणीतं पृथु-धर्म-तीर्थं,
ज्येष्ठं जनाः प्राप्य जयन्ति दुःखम्।
गाङ्गं ह्रदं चन्दन-पङ्क-शीतं,
गज-प्रवेका इव घर्म-तप्ताः।।4।।

धर्म तीर्थ के प्रखर प्रणेता, मोक्षमार्ग प्रभावक हो।
सर्व जीव के दुख हर्ता प्रभु, भव्य जीव के तारक हो।।
ग्रीष्म काल की तीव्र ताप से, पीड़ित गज क्लेशित होते।
चन्दन-सी शीतलता पाने, गंगाजल स्नपित होते।।4।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ-प्रणेता-श्री-अजितनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स ब्रह्मनिष्ठः सम-मित्र-शत्रु-
र्विद्या-विनिर्वान्त-कषाय दोषः।
लब्धात्मलक्ष्मीरजितोऽजितात्मा,
जिन-श्रियं मे भगवान् विधत्ताम्।।5।।

ब्रह्मनिष्ठ हो शत्रु मित्र में, समता धरकर पार हुए।
आत्म ज्ञान व आत्म ध्यान से, क्रोध क्षोभ सब नाश किये।।
अनंत चतुष्टय प्राप्त किया सब, इन्द्रिय पर जय पाया है।
अरहन्त गुणों से भूषित जिनवर, अजितनाथ मन भाया है।।5।।

ॐ ह्रीं समताधारक-कर्मनिवारक-अजितनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज।।

ॐ ह्रीं श्री-अजितनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. श्री संभवनाथ भगवान की जय

त्वं शम्भवः संभव-तर्ष-रोगैः,
संतप्यमानस्य जनस्य लोके।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो,
वैद्यो यथाऽनाथरुजां प्रशान्तयै।।1।।

भव्य जीव संसारी प्राणी, भोग रोग से घिरा हुआ।
दीन अनाथ का कर्मोदय से, सुख का मुख तो फिरा हुआ।।
ऐसे जो संतप्त जीव हैं, उसके उद्धारक मुनिराज।
संभव भव के रोग हरण में, निष्कांक्षी वैद्यक ऋषिराज।।1।।

ॐ ह्रीं भवरोगहराय श्री-संभवनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनित्यमत्राणमहंक्रियाभिः,
प्रसक्त-मिथ्याऽध्यवसाय-दोषम्।
इदं जगज्जन्म-जराऽन्तकार्तं,
निरञ्जनां शान्तिमजीगमस्त्वम्॥2॥

मैं और मेरा बुद्धि लिए जो, मिथ्या भाव से दूषित हैं।
जन्म जरा मृत्यु के कारण, जगति में सब पीड़ित हैं॥
है अनित्य अशरण संसारा, उसमें उलझा रहता हूँ।
संभवनाथ की शरण में आकर, सुलझा सुलझा रहता हूँ ॥2॥

ॐ ह्रीं अहंकार-ममकारभाव-विनाशनाय श्री-संभवनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतह्रदोन्मेष-चलं हि सौख्यं,
तृष्णाऽऽमयाऽप्यायन-मात्र-हेतुः।
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं,
तापस्तदायासयतीत्यवादीः॥3॥

विद्युत की चमचम से चंचल, इन्द्रिय सुख का भान रहा।
तृष्णा से भव रोग बढ़ाने, करता मैं सम्मान रहा॥
पर पदार्थ के आकर्षण में, अपने को परेशान किया।
ऐसा संभव श्री जिनवर ने, हमको सम्यग्ज्ञान दिया॥3॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियातीत-सुखानुभवाय श्री-संभवनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बन्धश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतू,
बद्धश्च मुक्तश्च फलं च मुक्तेः
स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं,
नैकान्तदृषेस्त्वमतोऽसि शास्ता॥4॥

बंध मोक्ष और उसका कारण, साथ निवारण ज्ञान दिया।
जीव कर्म का नीर क्षीर सम, बंधन हैं यह भान हुआ॥
स्याद्वाद अनेकान्त दृष्टि से, सुन्दर-सा व्याख्यान किया।
संभवनाथ की वाणी से ही, तत्वारथ का ज्ञान हुआ॥4॥

ॐ ह्रीं तत्वज्ञानप्रकाशकाय श्री-संभवनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शक्रोऽप्यशक्तस्तव पुण्यकीर्तेः,
स्तुत्यां प्रवृत्तः किमु मादृशो-ज्ञः।
तथापि भक्त्या स्तुत-पाद-पद्मो,
ममार्य! देयाः शिवतातिमुच्चैः॥5॥

जिनवर तेरे गुण वर्णन को, इन्द्र भी असमर्थ रहा।
मैं अज्ञानी गुण गाने को, किञ्चित ना समर्थ हुआ॥
अन्तर्मन की दिव्य प्रेरणा, पाद पद्म स्तुति करता।
निर्मल अतिशय उच्च सुखों को, पाने तब भक्ति रचता॥5॥

ॐ ह्रीं अपवर्गसुखप्राप्ताय श्री-संभवनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥

ॐ ह्रीं श्री-संभवनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. श्री अभिनन्दननाथ भगवान की जय

गुणाऽभिनन्दादभिनन्दनो भवान्,
दयावधूं क्षान्ति-सखीमशिश्रियत्।
समाधि-तन्त्रस्तदुपोपपत्तये,
द्वयेन नैर्ग्रन्थ्य-गुणेनचायुजत्॥1॥

गुण रत्नों से भूषित जिनवर, अभिनन्दन स्वामी भगवान।
दया वधु और क्षमा सखि के, आश्रित हैं तब आत्म महान॥
आत्मधर्म का ध्यान किया और, भाव समाधि को धारा।
द्वय निर्ग्रन्थ पने को पाकर, निज आतम को शृंगारा॥1॥

ॐ ह्रीं दयाक्षमा-गुण-विभूषिताय श्री-अभिनन्दननाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अचेतने तत्कृत-बन्धजेऽपि च,
ममेदमित्याऽभिनिवेशिक-ग्रहात्।
प्रभंगुरे स्थावर-निश्चयेन च,
क्षतं जगत्-तत्त्वमजिग्रहद्भवान्॥2॥

जड़ चेतन से बंधकर प्राणी, घोर महा दुख पाता है।
मैं मेरे का भाव धरे से, मिथ्या भाव भ्रमाता है।।
नाशवान अस्थिर वस्तु को, स्थिर मान के मोह करे।
करुणाधर कर अभिनन्दन जी, सप्त तत्व संबोध करे।।2।।

ॐ ह्रीं तत्वज्ञान-प्रतिबोधकाय श्री-अभिनन्दननाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुदादि-दुःख-प्रतिकारतः स्थिति-
र्न चेन्द्रियार्थ-प्रभवाल्प-सौख्यतः।
ततो गुणो नास्ति च देह-देहिनो
रितीदमित्थं भगवान् व्यजिज्ञपत्।।3।।

भूख प्यास के प्रतिकार को, भोजन पान ग्रहण करता।
पंचेन्द्रिय के विषय भोगकर, जीव कभी न सुख वरता।।
तन न तन धारी आतम की, स्थिति ना उद्धार हुआ।
ऐसा उद्बोधन दे प्रभुवर ने, जगति का उपकार किया।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टादशदोषरहिताय श्री-अभिनन्दननाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जनोऽतिलोलोऽप्यनुबन्धदोषतो,
भयादकार्येष्विह न प्रवर्तते।
इहाऽप्यमुत्राऽप्यनुबन्धदोषवित्,
कथं सुखे संसजतीति चाऽब्रवीत्।।4।।

विषयासक्ति मोही प्राणी, भय से पाप तजा करता।
धर्म कर्म करता रहता और, पुण्य पाप वरता रहता।।
सम्यग्ज्ञानी इह परभव का, दोष सदा जाना करता।
इसमें ना फँसना है मुझको, ऐसा वह माना करता।।4।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियासक्तिभाव-निवारकायै श्री-अभिनन्दननाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स चाऽनुबन्धोऽस्य जनस्य तापकृत्,
तृषोऽभिवृद्धि सुखतो न च स्थितिः।
इति प्रभो लोक-हितं यतो मतं,
ततो भवानेव गतिः सतां मतः।।5।।

आसक्ति का भाव जीव को, निशदिन संतापित करता।
तृष्णा की वो आग लगाकर, सुख से विस्थापित करता।।
इसलिए प्रभु अभिनन्दन ने, भव उद्धारक ज्ञान दिया।
भव्य जीव सज्जन पुरुषों ने, शरणभूत कल्याण किया।।5।।

ॐ ह्रीं शरणागत-वत्सलाय श्री-अभिनन्दननाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय।।

ॐ ह्रीं श्री-अभिनन्दननाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. श्री सुमतिनाथ भगवान की जय

अन्वर्थसंज्ञः सुमतिर्मुनिस्त्वं,
स्वयं मतं येन सुयुक्ति-नीतम्।
यतश्च शेषेषु मतेषु नास्ति,
सर्व-क्रिया-कारक-तत्त्व-सिद्धिः।।1।।

सुमतिनाथ ने सुमति पाकर, सम्यक मत विस्तार किया।
आत्म ज्ञान से युक्ति युक्त हो, तत्वारथ स्वीकार किया।।
सर्व क्रिया कारक तत्वों की, तेरे मत से सिद्धि हैं।
अनेकान्त ही समन्वयक हैं, बाकी मत मिथ्या दृष्टि हैं।।1।।

ॐ ह्रीं सम्यग्ज्ञान-उद्योतनाय श्री-सुमतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकमेकं च तदेव तत्त्वं,
भेदाऽन्वयज्ञानमिदं हि सत्यम्।
मृषोपचारोऽन्तरस्य लोपे,
तच्छेषलोपोऽपि ततोऽनुपाख्यम्।।2।।

एक वही है नेक वही है, भेद वही अभेद वही।
पर्यायों से नेक वही, पर द्रव्यापेक्षा एक वही।।
द्रव्य बिना पर्याय टिके ना, पर्याय बिना ना द्रव्य रहे।
भेदाभेद उभय स्वरूपी, काल अवस्थित जिनमत कहे।।2।।

ॐ ह्रीं द्रव्य-पर्याय-विवेचकाय सुमतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सतः कथंचित् तदसत्त्व-शक्तिः,
खे नास्ति पुष्पं तरुषु प्रसिद्धम्।
सर्व-स्वभाव-च्युतमप्रमाणं,
स्व-वाग्-विरुद्धं तव दृष्टितोऽन्यत्॥3॥

सत् रूपी जो आत्म तत्व है, अपनी शक्ति के कारण।
परापेक्षा असत् रूप जो, होकर भी ना हो धारण॥
पुष्पवृक्ष में अस्ति सिद्ध है, नभ में नास्ति रूप अहो।
निज वचनों के विमुख रहे वह, अन्यभाव दुख रूप कहो॥3॥

ॐ ह्रीं सत्स्वरूपाय श्री-सुमतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न सर्वथा नित्यमुदेत्यपैति,
न च क्रिया-कारकमत्र युक्तम्।
नैवाऽसतो जन्म सतो न नाशो,
दीपस्तमः पुद्गलभावतोऽस्ति॥4॥

एक रूप ना नित्य मान ना, क्रिया-कारक युक्त कहा।
इन भावों से जैसा वैसा, उत्पाद व्यय संयुक्त रहा॥
ना जन्में ना विनशे जगमें, ऐसा ज्ञान प्रगट कर लो।
तम हो चाहे उज्ज्वल किरणें, पुद्गल पर्याये समझो॥4॥

ॐ ह्रीं उत्पादव्यय धोव्ययुक्ताय-श्री-सुमतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिर्निषेधश्च कथञ्चिदिष्टौ,
विवक्षया मुख्य-गुण-व्यवस्था।
इति प्रणीतिः सुमतेस्तवेयं,
मति-प्रवेकः स्तुवतोऽस्तु नाथ॥5॥

अनेकान्त है एक मथानी, विधि निषेध से मन्थन है।
मुख्य गौण करना वक्ता के, इच्छा रूप ही चिन्तन है॥
सुमतिनाथ जिनवर की शैली, तत्वों का प्रतिपादन है।
तेरी भक्ति बुद्धि शुद्धि का, साक्षात् सम्पादन है॥5॥

ॐ ह्रीं स्याद्वाद-अनेकान्त-धर्म प्रतिपादकाय श्री-सुमतिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री-सुमतिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. श्री पद्मप्रभु भगवान की जय

(हे दीन बंधु श्रीपति)

पद्मप्रभः पद्म-पलाश-लेश्यः,
पद्मालयाऽऽलिङ्गतचारुमूर्तिः।
बभौ भवान् भव्य-पयोरुहाणां,
पद्माऽऽकराणामिव पद्मबन्धुः॥1॥

हे पद्म प्रभु पद्म, प्रभा के सदाधारी।
हे चारुमूर्ति समवशरण, के ही विहारी॥
हे भव्य जीव को, चरण सूर्य किरण है।
मन पद्म सद्य खिल रहा, जो तेरी शरण है॥1॥

ॐ ह्रीं चारुमूर्तये श्री-पद्मप्रभदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बभार पद्मां च सरस्वतीं च,
भवान् पुरस्तात् प्रतिमुक्तिलक्ष्म्याः।
सरस्वतीमेव समग्र-शोभां,
सर्वज्ञ-लक्ष्मीं ज्वलितां विमुक्तः॥2॥

दिव्य ध्वनि रूप ले, माँ भारती आई।
मोक्ष गमन पूर्व, सदा आरती गाई॥
सर्व शोभा धार रहे, समवशरण में।
कर्म जला मोक्ष गए, एक क्षण में॥2॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि रूपाय श्री-पद्मप्रभुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरीर-रश्मि-प्रसरः प्रभोस्ते,
बालाऽर्क-रश्मिच्छविराऽलिलेप।
नराऽमराऽऽकीर्ण-सभां प्रभावच्-
छैलस्य पद्माऽऽभमणेः स्व-सानुम्॥3॥

लाल वर्ण बाल, सूर्य सी प्रभा लिए।
चमक रहे चतुर्मुखी, रूप विभा लिए।।
घेर लिए देव गण, से भरी सभा।
ज्यों धरा घेर रहा, सूर्य की प्रभा।।3।।

ॐ ह्रीं समवशरण विराजित-चतुर्मुखजिनाय श्री-पद्मप्रभुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नभस्तलं पल्लवयन्निव त्वं,
सहस्रपत्राऽम्बुज - गर्भचारैः।
पादाऽम्बुजैः पातित-मार-दर्पो,
भूमौ प्रजानां विजहर्थ भूत्यै।।4।।

नभतल पल्लव से परिपूरित, स्वर्ण कमल की रचना है।
उसके ऊपर चलते जिनवर, लखते मेरे नयना हैं।।
कदम कदम पर कमल रचा था, जब प्रभु ने विहार किया।
सुर नर पशु गति के जीवों को, धर्म देय उपकार किया।।4।।

ॐ ह्रीं चरण-कमलाधिपतये श्री-पद्मप्रभुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणाऽम्बुधेर्विप्रुषमप्यजस्रं,
नाऽऽखण्डलः स्तोतुमलं तवर्षेः।
प्रागेव मादृक् किमुताऽतिभक्ति,
र्मां बालमालाऽऽपयतीदमित्थम्।।5।।

तेरे गुण सागर को जिनवर, देव इन्द्र ना गा सकता।
मैं अज्ञानी मतिहीन हूँ, गुण गौरव क्या कह सकता।।
फिर भी मेरी अन्तर्शक्ति, बालक सम बनकर आई।
शब्दों का आश्रय ले करके, मन प्रेरित हो हर्षाई।।5।।

ॐ ह्रीं प्रवचन-वाचस्पतये श्री-पद्मप्रभुदेवाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री-पद्मप्रभु-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. श्री सुपार्श्वनाथ भगवान की जय

स्वास्थ्यं यदाऽऽत्यन्तिकमेष पुंसां,
स्वार्थो न भोगः परिभंगुराऽऽत्मा।
तृषोऽनुषङ्गान् न च तापशान्ति,
रितीदमाख्यद् भगवान् सुपार्श्वः॥1॥

अविनाशी अविकारी आतम, कर्म रहित चिन्मय सुख धाम।
यही प्रयोजन जीव तत्व का, क्षण भंगुर सब भोग विराम॥
भोगों की तृष्णा बढ़ती है, चाह दाह न शान्त हुए।
जो भी इन्द्रिय भोग में फँसता, नाथ कहे वह क्लान्त हुए॥1॥

ॐ ह्रीं इन्द्रीयातीत-चिदानंदाय श्री-सुपार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजंगमं जङ्गम-नेय-यंत्रं,
यथा तथा जीव-धृतं शरीरम्।
बीभत्सु पूति क्षयि तापकं च,
स्नेहो वृथाऽत्रेति हितं त्वमाख्यः॥2॥

जड़ न चलता बुद्धि पूर्वक, उसे चलावे जीव सदा।
ऐसा ही जड़ तन है सारा, चेतन जीव चलावे मुदा॥
सन्तापित नश्वर गन्दापन, उसका न अनुराग करो।
व्यथा समय उसको दे करके, न नरभव बर्बाद करो॥2॥

ॐ ह्रीं जड़तत्व-विमुक्ताय श्री-सुपार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अलङ्घ्यशक्ति - र्भवितव्यतेयं,
हेतु-द्वयाऽऽविष्कृत-कार्य-लिङ्गा।
अनीश्वरो जन्तुरहंक्रियाऽर्तः,
संहत्य कार्येष्विति साध्ववादीः॥3॥

कर्मोदय न लाँघ सकेगा, उसकी शक्ति अद्भुत है।
बाह्याभ्यन्तर द्वय कारण से, कार्य सदा ही उद्भुत है॥
शुभ कर्मों से कार्य बने पर, अहंकार बाधा डाले।
नाथ सुपारस बात बताकर, कर्मोदय सब मम टाले॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म-विमुक्ताय श्री-सुपार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

बिभेति मृत्योर्न ततोऽस्ति मोक्षो,
नित्यं शिवं वाञ्छति नाऽस्य लाभः।
तथाऽपि बालो भय-काम-वश्यो,
वृथा स्वयं तप्यत इत्यवादीः।।4।।

भयकारी मृत्यु से डरता, पर छुटकारा ना मिलता।
सिद्धशिला चाहे यह प्राणी, वो भी ना उसको मिलता।।
जन्म मरण मद काम क्रोध से, सदा दुखी रहता प्राणी।
आराधन कर निज जिनत्व की, नाथ सुपारस की वाणी।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वभय-मुक्ताय श्री-सुपार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वस्य तत्त्वस्य भवान् प्रमाता,
मातेव बालस्य हिताऽनुशास्ता।
गुणाऽवलोकस्य जनस्य नेता,
मयाऽपि भक्त्या परिणूयसेऽद्य।।5।।

सर्व तत्व के ज्ञाता दृष्टा, दोष रहित जिनदेव महान।
माता सम हितकारी माने, तव उपदेश करे कल्याण।।
मोक्ष मार्ग के जन गण नेता, सत् पथ दर्शक इष्ट जिनेश।
भक्ति पूर्वक स्तुति करता, पाने तेरा मोक्ष प्रदेश।।5।।

ॐ ह्रीं सतपथदर्शकाय श्री-सुपार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक।।

ॐ ह्रीं श्री-सुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की जय

चन्द्रप्रभं चन्द्र-मरीचि-गौरं,
चंन्दं द्वितीयं जगतीव कान्तम्।
वन्देऽभिवन्द्यं महतामृषीन्द्रं,
जिनं जित-स्वान्त-कषाय-बन्धम्।।1।।

चन्द्र किरण सम शुक्ल वर्ण के, तन धारी जिनवर भगवान।
दिव्य चन्द्र सम उज्ज्वल मनहर, कान्ति मई है केवलज्ञान॥
कर्म रिपु को जीत जिनेश्वर, चन्द्रशिला पर वास किया।
ऋषि मुनियों ने वन्दन करके, निज आतम प्रकाश किया॥1॥

ॐ ह्रीं ईषत्प्राग्भार-चन्द्रशिला-स्थिताय श्री-चन्द्रप्रभु-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्याङ्ग-लक्ष्मी-परिवेष-भिन्नं,
तमस्तमोऽरेरिव रश्मिभिन्नम्।
ननाश बाह्यं बहु मानसं च,
ध्यान-प्रदीपाऽतिशयेन भिन्नम्॥2॥

सूर्य किरण की तीव्र प्रभा से, अंधकार नश जाता है।
चन्द्र नाथ की चन्दकृपा से, कर्म तिमिर छट जाता है॥
शुक्ल ध्यान की अद्भुत महिमा, निज आतम में प्रखर हुई।
केवलज्ञान की दिव्य प्रभा से, प्रमुदित होकर निखर गई॥2॥

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानपवित्राय श्री-चन्द्रप्रभुजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-पक्ष-सौस्थित्य-मदाऽवलिप्ता,
वाक्सिंह-नादैर्विमदा बभूवुः।
प्रवादिनो यस्य मदार्द्रगण्डा,
गजा यथा केसरिणो निनादैः॥3॥

सिंह नाद जब करता वन में, हस्ति मस्ती खो देता।
गोल कपोल से मद जो झरता, वो भी क्षण में खो देता॥
हे नाथ! आपके दिव्य वचन से, मिथ्या तम सब दूर हुआ।
सम्यग्ज्ञान जगत में फैला, धर्म ध्यान भरपूर हुआ॥3॥

ॐ ह्रीं धर्मध्यान-विस्तारकाय श्री-चन्द्रप्रभु जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यः सर्वलोके परमेष्ठिताया:,
पदं बभूवाऽद्भुत-कर्मतेजाः।
अनन्त-धामाऽक्षर-विश्वचक्षुः,
समन्तदुःख-क्षय-शासनश्च॥4॥

सर्व लोक के हितकारी हो, परमेष्ठी पद के धारी।
सर्व जीव को निज भाषा में, उपदेश दिए विस्मय कारी॥
अविनाशी ज्योतिर्मय जिनवर, विश्व चक्षु बन निरख रहे।
दुःख नाशक हे सुखकारक प्रभु, तेरे दरश को तड़फ रहे॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वभाषा-प्रबोधकाय श्री-चन्द्रप्रभुजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स चन्द्रमा भव्य-कुमुद्वतीनां,
विपन्न-दोषाऽभ्र-कलङ्क-लेपः।
व्याकोश-वाङ्-न्याय-मयूख-मालः,
पूयात् पवित्रो भगवान् मनो मे॥5॥

भव्य जीव के हृदय कमल को, विकसाने वाले चन्द्रेश।
राग द्वेष से रहित आप हो, त्रिभुवन ज्ञायक हे अखिलेश॥
ज्ञान कोश से न्याय वचन की, सुन्दर माला बनवाई।
मन मन्दिर को पावन कर दो, कर्म रहित जिन सुखदाई॥5॥

ॐ ह्रीं ज्ञायकस्वरूपाय श्री-चन्द्रप्रभु-जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप॥

ॐ ह्रीं श्री-चन्द्रप्रभु-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. श्री पुष्पदन्त भगवान की जय

एकान्तदृष्टि-प्रतिषेधि तत्त्वं,
प्रमाण-सिद्धं तदतत्-स्वभावम्।
त्वया प्रणीतं सुविधे! स्वधाम्ना,
नैतत्समालीढ-पदं त्वदन्यैः॥1॥

पुष्पदन्त जी जिनवर प्यारे, मत एकान्त निषिद्ध किया।
अनेकान्त के पोषक होकर, तत्व प्रमाण से सिद्ध किया॥
विधि निषेध से वस्तु तत्व का, सुन्दर सा व्याख्यान किया।
अन्य धर्म में किसी रूप में, अनुभव न सद्ज्ञान दिया॥1॥

ॐ ह्रीं विधिनिषेधश्च-ज्ञाता श्री-पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तदेव च स्यान् न तदेव च स्यात्,
तथाप्रतीतेस्तव तत्कथञ्चित्।
नात्यन्तमन्यत्वमनन्यता च,
विधेर्निषेधस्य च शून्य-दोषात्॥2॥

जिनमत अस्ति नास्ति स्वरूपा, भिन्न भिन्न अपेक्षा से।
स्वपर चतुष्टय के कारण से, सत् असत् अनुप्रेक्षा से॥
ना मानो तुम सदा सर्वदा, भेदा-भेद पना ज्ञानी।
सुविधि ज्ञान से समझो उसको, शून्य दोष ना हो प्राणी॥2॥

ॐ ह्रीं अस्तिनस्तिरूप-धर्म-प्रकाशकाय श्री-पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्यं तदेवेदमिति प्रतीते-र्न,
नित्यमन्यत्-प्रतिपत्ति-सिद्धेः।
न तद्विरुद्धं बहिरन्तरङ्ग,
निमित्त-नैमित्तिक-योगतस्ते॥3॥

जो पहले था आज वही है, जो दिखता वह कल ना था।
ये प्रतिती ही नित्या नित्या, जैनागम सिद्धि करता॥
बाह्याभ्यन्तर कारण जो हैं, निमित्त उपादान कारण।
नहीं विरोधाभास है किंचित, समझो जानो कर धारण॥3॥

ॐ ह्रीं निमित्तोपादन-प्रतिपादकाय श्री-पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकमेकं च पदस्य वाच्यं,
वृक्षा इति प्रत्ययवत् प्रकृत्या।
आकाङ्क्षिणः स्यादिति वै निपातो,
गुणाऽन-पेक्षे नियमेऽपवादः॥4॥

शब्द कहो या पद वाचक है, प्रगट पदार्थ ही वाच्य कहा।
एकानेक जो वस्तु रूप है, ऐसा वृक्ष ही साध्य कहा॥
मनगत शब्द स्वभाव रूप ही, अर्थ बोध करवाता है।
गुणपेक्षा एकान्त कथन ही, बाधक बनकर आता है॥4॥

ॐ ह्रीं निश्चय-व्यवहारधर्म-उद्घोषकाय श्री-पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण-प्रधानार्थमिदं हि वाक्यं,
जिनस्य ते तद् द्विषतामपथ्यम्।
ततोऽभिवन्द्यं जगदीश्वराणां,
ममापि साधोस्तव पादपद्मम्॥5॥

मुख्य गौण से वाक्य सदा ही, अपना अर्थ बताता है।
"स्यात्" शब्द से सज्जित वक्ता, द्वयार्थ बोध कराता है॥
वस्तु स्वरूप झलकाने वाले, पुष्पदन्त प्रभु तुम्हें प्रणाम।
मोक्ष मार्ग के प्रखर प्रवक्ता, देव इन्द्र करते सम्मान॥5॥

ॐ ह्रीं शतेन्द्रअर्चिताय श्री-पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री-पुष्पदन्त-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. श्री शीतलनाथ भगवान की जय

न शीतलाश्चन्दनचन्द्ररश्मयो,
न गाङ्गमम्भो न च हारयष्टयः।
यथा मुनेस्तेऽनघवाक्यरश्मयः,
शमाम्बुगर्भाः शिशिरा विपश्चिताम्॥1॥

शीतल चन्दन चन्द्र रश्मियाँ, न गंगा का जल शीतल।
ना मोती की माला शीतल, वाणी तेरी है शीतल॥
पाप रहित निर्दोष वचन तो, मुनियों द्वारा मुखरित हैं।
शान्त निराकुल सुख देती वो, भेद ज्ञान से प्रगटित है॥1॥

ॐ ह्रीं आत्मशान्ति-प्रदायकाय श्री-शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखाऽभिलाषाऽनल-दाह-मूर्च्छितं,
मनो निजं ज्ञानमयाऽमृताम्बुभिः।

व्यदिध्यपस्त्वं विष-दाह-मोहितं,
यथा भिषग्मंत्र-गुणैः स्व-विग्रहम्॥2॥

इन्द्रिय सुख की अभिलाषा को, तप अग्नि से जला दिया।
आत्म ज्ञान की अमृतधारा, देकर उसको जगा दिया॥
नाग डसे तो विष पूरित हो, मूर्च्छामय यह तन होता।
मांत्रिक के मंत्रों द्वारा ज्यों, यह प्राणी चेतन होता॥2॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियसुख-विमुक्ताय श्री-शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-जीविते काम-सुखे च तृष्णया,
दिवा श्रमाऽऽर्ता निशि शेरते प्रजाः।
त्वमार्य! नक्तं-दिवमप्रमत्तवा,
नजागरेवाऽऽत्म-विशुद्ध-वर्त्मनि॥3॥

काम भोग में रचे पचे जो, नर हरदम पीड़ित रहते।
उसको पाने निशदिन प्राणी, श्रम करते थकते रहते॥
आत्म शुद्धि के प्रबल भाव से, तज प्रमाद जागृत रहते।
जिनवर शीतलनाथ सदा ही, मम आतम उपकृत करते॥3॥

ॐ ह्रीं प्रमाद-रहिताय श्री-शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपत्य-वित्तोत्तर-लोक-तृष्णया,
तपस्विनः केचन कर्म कुर्वते।
भवान् पुनर्जन्म-जरा-जिहासया,
त्रयीं प्रवृत्तिं समधीरवारुणत्॥4॥

सम्यक श्रद्धा के विन प्राणी, धन सुत सुख वांछा करते।
कर्मों के ही वशीभूत हो, नाना विध कांछा करते॥
जन्म जरा मृत्यु का नाशक, आप सदा ही तप करते।
मन वच तन की चंचलता तज, रत्नत्रय अनुभव करते॥4॥

ॐ ह्रीं निदानवंध-रहिताय श्री-शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वमुत्तम-ज्योतिरजः क्व निर्वृतः,
क्व ते परे बुद्धि-लवोद्धव-क्षताः।
ततः स्व निःश्रेयस-भावनापरै-
र्बुध-प्रवेकैर्जिन-शीतलेड्यसे।।5।।

उत्तम ज्योति पुंज के धारक, पुनर्जन्म से रहित हुए।
आप समा ना कोई जग में, ज्ञान गर्व से रहित रहे।।
मोक्ष मार्ग अनुरागी गणधर, आराधन तेरी करते।
शीतलनाथ की स्तुति करते, मोक्ष निकेतन को वरते।।5।।

ॐ ह्रीं पुनर्जन्म-रहिताय श्री-शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय।।

ॐ ह्रीं श्री-शीतलनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की जय

श्रेयान् जिनः श्रेयसि वर्त्मनीमाः,
श्रेयः प्रजाः शासदजेयवाक्यः।
भवांश्चकासे भुवनत्रयेऽस्मिन्,
नेको यथा वीतघनो विवस्वान्।।1।।

श्रेयनाथ ने श्रेय वचन से, श्रेयस्कर उपदेश दिया।
संसारी प्राणी ने सुनकर, अपने हित संदेश लिया।।
तीन लोक में आप अकेले, दिव्य सूर्य से चमक रहे।
जिनवर श्री श्रेयांसनाथ जी, समवशरण में दमक रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रेयमार्गं सिद्धिदायक श्री-श्रेयांसनाथाय-नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विधिर्विषक्त-प्रतिषेधरूपः,
प्रमाणमत्राऽन्यतरत्प्रधानम्।
गुणोऽपरो मुख्य-नियामहेतु-र्नयः,
स दृष्टान्तसमर्थनस्ते।।2।।

प्रामाणिक है ज्ञान आपका, सर्व ज्ञान में मुख्य रहा।
विधि निषेध के रूप में रहकर, वक्ता का मन्तव्य कहा।।
वस्तु में जो नेक धर्म हैं, मुख्य गौण कर-कर कहता।
अभिप्राय को जान अरे नर, सर्व द्वन्द सुख से टलता।।2।।

ॐ ह्रीं अनेकान्तधर्म-प्रतिपादकाय श्री-श्रेयांसनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विवक्षितो मुख्य इतीष्यतेऽन्यो,
गुणोऽविवक्षो न निरात्मकस्ते।
तथाऽरिमित्रानुभयादि-शक्तिः,
द्वयाऽवधिः कार्यकरं हि वस्तु।।3।।

जिनके बारे में चर्चा है, मुख्य विवक्षित कहलाता।
अविवक्षित गौण रूप है, जिन दर्शन यह बतलाता।।
शत्रु मित्र अरुँ अनुभय शक्ति, हर वस्तु में होती है।
मर्यादा का आश्रय लेकर, कार्यकारी ही होती है।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वविवाद-निरोधकाय श्री-श्रेयांसनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दृष्टान्त-सिद्धावुभयोर्विवादे,
साध्यं प्रसिद्ध्येन्न तु तादृगस्ति।
यत्सर्वथैकान्त-नियामिदृष्टं,
त्वदीय-दृष्टिर्विभवत्यशेषे।।4।।

वादी हो या प्रतिवादी हो, वह विवाद में रहता है।
दृष्टांतों से निर्णय लेकर, साध्य सिद्ध को कहता है।।
दोनों की बातें बन जाती, एकान्तवाद मिट जाता है।
अनेकान्त ही सर्व मतों में, सहज भाव जुट जाता है।।4।।

ॐ ह्रीं शुभसंवाद-प्रदर्शकाय श्री-श्रेयांसनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्त-दृष्टि-प्रतिषेध-सिद्धि-
र्न्यायेषुभिर्मोहरिपुं निरस्य।
असि स्म कैवल्य-विभूति-सम्राट्,
ततस्त्वमर्हन्नसि में स्तवाऽर्हः।।5।।

अनेकान्त के प्रतिपादन से, छट जाता एकान्त विचार।
न्याय वाण से मिथ्या भ्रम का, झट हो जाता है संहार।।
मोह शत्रु को विदितयोग ने, ध्यान शस्त्र से मार दिया।
समवशरण में दिव्य ध्वनि दे, भव्यों का उपकार किया।।5।।

ॐ ह्रीं ध्यानधुरन्धराय श्री-श्रेयांसनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्।।

ॐ ह्रीं श्री-श्रेयांसनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. श्री वासुपूज्य भगवान की जय

शिवासु पूज्योऽभ्यूदय-क्रियासु,
त्वं वासुपूज्यस्त्रिदशेन्द्र-पूज्यः।
मयाऽपि पूज्योऽल्प-धिया मुनीन्द्र,
दीपार्चिषा किं तपनो न पूज्यः।।1।।

कल्याणक शुभ पंच प्राप्त कर, वासुपूज्य जग पूज्य हुए।
देव नरेन्द्र ने सेवा करके, अपना जीवन धन्य किए।।
अल्पज्ञानी मैं भक्ति करता, श्रद्धा से भरकर जिनराज।
क्या दीपक की मन्द ज्योति से, नहीं पूजा जाता नभराज।।1।।

ॐ ह्रीं प्रथमबालब्रह्मचारी-तीर्थंकर श्री-वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न पूजयाऽर्थस्त्वयि वीतरागे,
न निन्दया नाथ विवान्त-वैरे।
तथापि ते पुण्य-गुण-स्मृतिर्नः,
पुनातु चित्तं दुरिताञ्जनेभ्यः।।2।।

वीतराग हो वीतद्वेष हो, निज पूजा से भिन्न रहे।
वैर रहित निन्दा होने पर, नहीं आप प्रभु खिन्न हुए।।
फिर भी पुण्य गुण स्मरण से, पाप गलित हो जाता है।
वासुपूज्य की दिव्य प्रभा से, मन पवित्र हो जाता है।।2।।

ॐ ह्रीं निन्दा-स्तुति-रहिताय श्री-वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्यं जिनं त्वार्चयतो जनस्य,
सावद्य-लेशो बहु-पुण्य-राशौ।
दोषाय नालं कणिका विषस्य,
न दूषिका शीत-शिवाऽम्बुराशौ॥3॥

तेरी पूजा से हे जिनवर, पुण्यों का भण्डार भरें।
लेशमात्र भी दोष लगे तो, वो भी निज उपकार करें॥
विष की एक कणिका जैसे, जल सागर में आ जावे।
अपने दुर्गण को तजकर वह, जल सम होकर इतरावे॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वसावद्यपाप-विनाशनाय श्री-वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यद्वस्तु बाह्यं गुण-दोष-सूते-
र्निमित्तमभ्यन्तर - मूलहेतोः।
अध्यात्म-वृत्तस्य तदङ्गभूत
मभ्यन्तरं, केवलमप्यलं ते॥4॥

बाह्य द्रव्य तो पुण्य पाप के, बन्धन का तो साधन है।
भीतर का जो परिणाम है, वही सत्य आराधन है॥
जैसा भाव प्रगट होता है, वैसा भव निर्मित होता।
पुण्य पाप या भाव शुभा शुभ, कर्मों से चिह्नित होता॥4॥

ॐ ह्रीं पुण्यपापभाव-प्रतिपादकाय श्री-वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्येतरोपाधि - समग्रतेयं,
कार्येषु ते द्रव्य-गतः स्वभावः।
नैवाऽन्यथा मोक्ष-विधिश्च पुंसां,
तेनाऽभिवन्द्यस्त्वमृषिर्बुधानाम्॥5॥

बाह्याभ्यन्तर के कारण ही, पूर्ण कार्य हो द्रव्य स्वभाव।
मोक्ष मार्ग भी द्वय कारण से, डाले साधन में प्रभाव॥
साधन के बिन साध्य न मिलता, यही आपने धर्म कहा।
ऋद्धिधारी गणधर स्वामी, वन्दन कर शिव शर्म लहा॥5॥

ॐ ह्रीं साध्य-साधन-समर्थकाय श्री-वासुपूज्याय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय॥

ॐ ह्रीं श्री-वासुपूज्य-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. श्री विमलनाथ भगवान की जय

य एव नित्य-क्षणिकादयो नया,
मिथोऽनपेक्षाः स्व-पर-प्रणाशिनः।
त एव तत्त्वं विमलस्य ते मुनेः,
परस्परेक्षाः स्व-परोपकारिणः॥1॥

नित्य क्षणिक एकान्त रूप नय, मिथ्यापेक्षा नाशक हैं।
एक दूजे से भिन्न रहे तो, एक दूजे के घातक हैं॥
विमलनाथ के विमल ज्ञान से, परस्पर सापेक्ष रहे।
एक दूजे का भला करें वे, यथार्थ रूप संक्षेप कहे॥1॥

ॐ ह्रीं परस्पर-सापेक्ष-धर्माय श्री-विमलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यथैकशः कारकमर्थ-सिद्धये,
समीक्ष्य शेषं स्व-सहाय-कारकम्।
तथैव सामान्य-विशेष-मातृका,
नयास्तवेष्टा गुण-मुख्य-कल्पतः॥2॥

एक दूजे के सहयोगी बन, कार्य सिद्धि में समर्थ हुए।
निज शक्ति तो उपादान है, और निमित्त तो व्यर्थ रहे॥
ऐसे ही सामान्य विशेषा, मुख्य गौण से बात कहे।
कार्य सिद्धि के हेतु जिनवर, आप कृपा मम साथ रहे॥2॥

ॐ ह्रीं कर्म-क्षयंकराय श्री-विमलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परस्परेक्षाऽन्वय-भेद-लिङ्गतः,
प्रसिद्ध-सामान्य-विशेषयोस्तव।
समग्रताऽस्ति स्व-पराऽवभासकं,
यथा प्रमाणं भुवि बुद्धि-लक्षणम्॥3॥

स्व-पर प्रकाशक ज्ञान आपका, जगति में प्रमाणिक है।
सामान्य कहे विशेष रहे वह, तव मत में स्वाभाविक है।।
पूर्ण रूप से स्व-पर प्रबोधक, ज्ञान सदा पावन करता।
विमलनाथ की विमल प्रभा से, मन सुरभित पावन रहता।।3।।

ॐ ह्रीं स्वपर-प्रकाशकाय श्री-विमलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विशेष्य-वाच्यस्य विशेषणं वचो,
यतो विशेष्यं विनियम्यते च यत्।
तयोश्च सामान्यमतिप्रसज्यते,
विवक्षितात्स्यादिति तेऽन्यवर्जनम्।।4।।

द्विधर्मी है वस्तु स्वरूपा, वाह्य विशेषण नाम दिया।
धर्म वाच्य विशेष हुआ तो, सामान्य विशेषण जान लिया।।
जिनमत की सुन्दर धारा में, अति प्रसंग का दोष नहीं।
स्यात् कथंचित् शब्दावली से, अविवक्षित में भी रोष नहीं।।4।।

ॐ ह्रीं दोषरहित-जिनमताय श्री-विमलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नयास्तव स्यात्पद-सत्य-लाञ्छिता,
रसोपविद्धाः इव लोह-धातवः।
भवन्त्यभिप्रेत-गुणा यतस्ततो,
भवन्तमार्याः प्रणता हितैषिणः।।5।।

विमलनाथ की दिव्य ध्वनि में, लक्षण सत् ही स्यात् कहा।
जैसे रस की धारा पाकर, लोह स्वर्ण सम गात रहा।।
आप समागम को पाकर के, आनन्दित हो जाते हैं।
आत्म हितैषी बनने को वे, नत मस्तक हो जाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं आत्म-कल्याणकाय श्री-विमलनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त।।

ॐ ह्रीं श्री-विमलनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. श्री अनन्तनाथ भगवान की जय

अनन्त-दोषाशय-विग्रहो ग्रहो,
विषङ्गवान् मोहमयश्चिरं हृदि।
यतो जितस्तत्त्वरुचौ प्रसीदता,
त्वया ततोऽभूर्भगवाननन्तजित्॥1॥

दोष अनन्ता आतम में है, राग द्वेष मद मोह कहो।
तत्व रुचि सम्यग् दर्शन से, जीत लिए सब कर्म अहो॥
इसीलिए हे अव्यय भगवन, नाम अनन्त को पाये हो।
कर्मों का सब अन्त किया प्रभु, अनन्त चतुष्टय पाए हो॥1॥

ॐ ह्रीं दोषरहित सम्यग्दर्शन-उत्पन्नाय श्री-अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कषाय-नाम्नां द्विषतां प्रमाथिना,
मशेषयन्नाम भवानशेषवित्।
विशोषणं मन्मथ दुर्मदाऽऽमयं,
समाधि-भैषज्य-गुणैर्व्यलीनयत्॥2॥

क्रोध काम मद लोभ मोह ने, आतम को संताप दिया।
कलुषित करता जो आतम को, जड़ से उसका नाश किया॥
ध्यान समाधि की औषध ले, परमातम में लीन हुए।
वीतरागी निर्ग्रन्थ-पना पा, निजानन्द लवलीन हुए॥2॥

ॐ ह्रीं कषायमुक्ताय समाधिसम्पन्नाय श्री-अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिश्रमाऽम्बुर्भय-वीचि-मालिनी,
त्वया स्वतृष्णा-सरिदाऽऽर्य! शोषिता।
असङ्ग-घर्मार्क-गभस्ति-तेजसा,
परं ततो निर्वृति-धाम तावकम्॥3॥

श्रम के जल से भरी आत्मा, भय तरंग से बल खाए।
तृष्णा रूपी बहे सरिता, जग प्राणी गोते खाए॥
द्विधा संग से मुक्त हुए, और तप सूरज से सुखा दिया।
आत्म ओज को जागृत करके, तीन लोक को झुका दिया॥3॥

ॐ ह्रीं अन्तरंग-बहिरंगपरिग्रह-विमुक्ताय श्री-अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुहृत्त्वयि श्रीसुभत्वमश्नुते,
द्विषंस्त्वयि प्रत्ययवत्प्रलीयते।
भवानुदासीनतमस्तयोरपि,
प्रभो परं चित्रमिदं तवेहितम्॥4॥

हृदय कमल भक्ति से भरकर, गुण गौरव को गाता है।
स्वर्ग मोक्ष का सुख पाकर के, आनन्दित हो जाता है॥
द्वेष करे निन्दक मिथ्यात्वी, प्रत्यय सम विलीन हुआ।
राग द्वेष से मुक्त क्रियाएँ, विस्मय स्व तल्लीन हुआ॥4॥

ॐ ह्रीं जिनगुण-प्रतिपादकाय श्री-अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वमीदृशस्तादृश इत्ययं मम,
प्रलाप-लेशोऽल्प-मतेर्महामुने।
अशेष-माहात्म्यमनीरयन्नपि,
शिवाय संस्पर्श इवामृताम्बुधेः॥5॥

तव गुण मणिमय शब्द सजाकर, कहता आप ऐसे वैसे।
अल्पबुद्धि आलाप करूँ मैं, श्रद्धा से भरकर जैसे॥
तेरे गुण महिमा सागर के, परस मात्र से सुख होता।
भक्ति मुक्ति देती जग में, सिद्धशिला सम्मुख होता॥5॥

ॐ ह्रीं भक्तजन-वत्सलाय श्री-अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त॥

ॐ ह्रीं श्री-अनन्तनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. श्री धर्मनाथ भगवान की जय

धर्म-तीर्थमनघं प्रवर्तयन्,
धर्म इत्यनुमतः सतां भवान्।

कर्म-कक्षमदहत्तपोऽग्निभिः,
शर्म शाश्वतमवाप शङ्करः॥1॥

धर्म तीर्थ पावन विकसाए, धर्मनाथ शुभ नाम है पाए।
तप अग्नि से कर्म जलाया, शाश्वत शिव शंकर गुण गाया॥1॥

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थ-विकसिताय धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-मानव-निकाय-सत्तमै,
रेजिषै परिवृतो वृतोबुधैः।
तारका-परिवृतोऽतिपुष्कलो,
व्योमनीवशश-लाञ्छनोऽमलः॥2॥

उत्तम देव नरों से सोहें, गणधर घेरे मन को मोहें।
जैसे निर्मल गगन में चन्दा, ताराओं से घिरे जिनन्दा॥2॥

ॐ ह्रीं समवशरण-विराजिताय श्री-धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य-विभवैः परिष्कृतो,
देहतोऽपि विरतो भवानभूत्।
मोक्षमार्ग - मशिषन्नरामरान्,
नाऽपि शासन-फलैऽषणाऽतुरः॥3॥

प्रातिहार्य लागे मनभावन, तन से निरत रहे प्रभु पावन।
मोक्ष मार्ग उपदेश के दाता, फल की इच्छा विरत विधाता॥3॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्य-युक्ताय श्री-धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काय-वाक्य-मनसां प्रवृत्तयो,
नाऽभवंस्तव मुनेश्चिकीर्षया।
नाऽसमीक्ष्य भवतः प्रवृत्तयो,
धीर तावकमचिन्त्यमीहितम्॥4॥

काय वचन मन किरिया छोड़ी, ना करने की इच्छा दौड़ी।
ऐसा न अज्ञान के कारण, धीर अचिन्त्य विस्मय का कारण॥4॥

ॐ ह्रीं मनवचनकाय-निरोधकाय श्री-धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषीं प्रकृतिमभ्यतीतवान्,
देवतास्वपि च देवता यतः।
तेन नाथ परमाऽसि देवता,
श्रेयसे जिनवृष! प्रसीद नः॥5॥

मानवीय स्वभाव अतीता, सब देवों के देव नमीता।
धर्मनाथ परमोत्तम देवा, हो प्रसन्न कल्याण करेवा॥5॥

ॐ ह्रीं परमोन्नत-गुणाय-श्री धर्मनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री-धर्मनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. श्री शान्तिनाथ भगवान की जय

विधाय रक्षां परतः प्रजानां,
राजा चिरं योऽप्रतिम-प्रतापः।
व्यधात्पुरस्तात्स्वत एव,
शान्तिर्मुनिर्दयामूर्तिरिवाऽघशान्तिम्॥1॥

सर्व शत्रु से प्रजाजनों की, रक्षा करते आप महान।
दीर्घ काल तक पराक्रमी रह, राज किया षट्खण्ड जहान॥
स्वयंबोध को पाकर शान्ति, मुनियों का सु-भेष धरे।
दया मूर्ति कहलाने वाले, शान्तिनाथ जय घोष करे॥1॥

ॐ ह्रीं परमशान्ति-विधायकाय श्री-शान्तिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चक्रेण यः शत्रु-भयंकरेण,
जित्त्वा नृपः सर्व-नरेन्द्र-चक्रम्।
समाधि-चक्रेण पुनर्जिगाय,
महोदयो दुर्जय-मोह-चक्रम्॥2॥

सर्व शत्रु को भय कारी था, चक्र आपका दिव्य विराट।
जिसके कारण जीतें राजा, बन गए चक्रवर्ती सम्राट॥

लिया समाधि चक्र आपने, कर्म बली को ललकारा।
मोह चक्र सबसे पहले आ, अपनी हार को स्वीकारा।।2।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्राय श्री-शान्तिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राज-श्रिया राजसु राज-सिंहो,
रराज यो राजसुभोग-तंत्रः।
आर्हन्त्य-लक्ष्म्या पुनरात्म-तंत्रो,
देवाऽसुरोदार-सभे रराज।।3।।

राज्याश्रित जो भोग मनोहर, उसे भोगने में स्वाधीन।
चक्रवर्ती पद को पाकर के, हुए सुशोभित राज प्रवीन।।
आत्म ओज का उद्भव करके, केवल ज्ञान को पाया है।
शत इन्द्रों से पूजित जिनवर, समवशरण मन भाया है।।3।।

ॐ ह्रीं त्रिपद-धारकाय श्री-शान्तिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्मिन्नभूद्राजनि राज-चक्रं,
मुनौ दया-दीधिति-धर्म-चक्रम्।
पूज्ये मुहुः प्राञ्जलि देव-चक्रं,
ध्यानोन्मुखे ध्वंसि कृतान्त-चक्रम!।।4।।

चक्रवर्ती के सम्मुख नृप गण, हाथ जोड़ अभिभूत रहे।
मुनि मुद्रा में दया किरण धर, धर्म चक्र वशीभूत रहे।।
अरिहन्त अवस्था पूज्य परम पद, देव चक्र गुणगान करें।
कर्म चक्र को ध्वंस किया प्रभु, तीन लोक प्रणाम करें।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वजन-वन्दनीयाय श्री-शान्तिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वदोष-शान्त्या-विहिताऽऽत्मशान्तिः,
शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद्भव-क्लेश-भयोपशान्त्यै,
शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।।5।।

दोष शान्त कर आत्म शक्ति को, पाए शान्तिनाथ भगवान।
जो तेरी शरणा आ जाता, पाता शान्ति सदा विश्राम।।

भय क्लेशों से मुक्त करो प्रभु, शान्ति सुधा रस बरसाओ।
शान्तिनाथ चरणाम्बुज पाकर, सुख सिन्धु में रम जाओ।।5।।

ॐ ह्रीं शान्ति-सुधारसाय श्री-शान्तिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों।।

ॐ ह्रीं श्री-शांतिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. श्री कुन्थुनाथ भगवान की जय

कुन्थु-प्रभृत्यखिल-सत्त्व-दयैकतानः,
कुन्थुर्जिनो ज्वर-जरा-मरणोपशान्त्यै।
त्वं धर्म-चक्रमिह वर्तयसि स्म भूत्यै,
भूत्वा पुरा क्षितिपतीश्वर-चक्रपाणिः।।1।।

कुन्थुनाथ जी कुन्थु जीव पर, दया धर्म विस्तार किया।
जन्म जरा ज्वर रोग मरण को, शान्त किया उद्धार किया।।
राज्य अवस्था में रह करके चक्रवर्ती पद को पाया।
कर्म नाश कर धर्म चक्र ले, मोक्ष मार्ग को महकाया।।1।।

ॐ ह्रीं दयाधर्म-प्रकाशकाय श्री-कुन्थुनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णार्चिषः परिदहन्ति न शान्तिरासा,
मिष्टेन्द्रियार्थ-विभवैः परिवृद्धिरेव।
स्थित्यैव काय-परिताप-हरं निमित्त,
मित्यात्मवान्विषयसौख्य पराङ्मुखोऽभूत्।।2।।

तृष्णा डायन अग्नि ज्वाला, चारों ओर से धधक रही।
इन्द्रिय सुख का साधन पाकर, शान्त नहीं वह भड़क रही।।
तन संताप निवारण हेतु, निमित्त भूत ही कारण है।
विरत होय सब विषय भोग से, अद्भुत आप उदाहरण हैं।।2।।

ॐ ह्रीं तृष्णा-रहिताय श्री-कुन्थुनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्यं तपः परम-दुश्चरमाचरंस्त्व,
माध्यात्मिकस्य तपसः परिबृंहणार्थम्।
ध्यानं निरस्य कलुष-द्वय मुत्तरस्मिन्,
ध्यानद्वये ववृतिषेऽतिशयोपपन्ने।।3।।

बाह्य साधना अनशन आदि, दुर्धर तप स्वीकार किया।
आध्यात्मिक उपलब्धि हेतु, आर्त रौद्र परिहार किया।।
धर्मध्यान और शुक्लध्यान से, आतम को चमकाया है।
कुन्थुनाथ चक्री तीर्थंकर, कामदेव पद पाया है।।3।।

ॐ ह्रीं द्वादशतप-धारकाय श्री-कुन्थुनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुत्वा स्व-कर्म-कटुक-प्रकृतीश्चतस्रो,
रत्नत्रयाऽतिशय-तेजसि जात-वीर्यः।
बभ्राजिषे सकल-वेद-विधेर्विनेता,
व्यभ्रे यथा वियति दीप्त-रुचिर्विवस्वान्।।4।।

हवन किया कटु चार घातियाँ, रत्नत्रय अतिशय द्वारा।
दरश ज्ञान सुख शक्ति पाकर, बही ज्ञान अमृतधारा।।
समवशरण में शोभित जिनवर, मानों ऐसे लगते हैं।
मेघों से ज्यों रहित गगन पर, सूर्य तेज से सजते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्म-विमुक्ताय श्री-कुन्थुनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्मान् मुनीन्द्र! तव लोक-पितामहाद्या,
विद्या-विभूति-कणिकामपि नाप्नुवन्ति।
तस्माद् भवन्तमजमप्रतिमेयमार्याः,
स्तुत्यं स्तुवन्ति सुधियः स्व-हितैकतानाः।।5।।

हे मुनीन्द्र! लौकिक सब देवा, आंशिक गुण ना पा सकते।
द्वादशांग से युक्त यतीश्वर, तेरे ध्यान में जा रमते।।
जन्म मरण से रहित आप हैं, त्रिभुवन स्वामी हितकारी।
तेरी पावन स्तुति करता, कुन्थुनाथ जिन अविकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अविकारी-जिन श्री-कुन्थुनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय॥

ॐ ह्रीं श्री-कुन्थुनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. श्री-अरहनाथ भगवान की जय

गुण-स्तोकं सदुल्लङ्घ्य, तद्बहुत्व-कथा स्तुतिः।
आनन्त्यात्ते गुणा वक्तु-मशक्यास्त्वयि सा कथम्॥1॥

अल्प गुणों को लाँघ कर, करे अधिक की बात।
अनन्त गुणों के धारी हो, कैसे कहुँ गुण नाथ॥1॥

ॐ ह्रीं गुणवर्धनाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तथाऽपि ते मुनीन्द्रयस्य, यतो नामाऽपि कीर्तितम्।
पुनाति पुण्य-कीर्तेर्नस्ततो, ब्रूयाम किञ्चन॥2॥

फिर भी मुनिगण ने सदा, नाम गुणों को गाय।
परम पवित्र यशनाम से, कर्म बन्ध नश जाय॥2॥

ॐ ह्रीं परमयशाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी - विभव - सर्वस्वं, मुमुक्षोश्चक्र - लाञ्छनम्।
साम्राज्यं सार्वभौमं ते, जरत् - तृणमिवाभवत्॥3॥

लक्ष्मी वैभव चक्र जो, था सारा साम्राज्य।
जीर्ण तीर्ण सम जान तज, पाया मुक्ति राज्य॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व-वैभव-विरक्ताय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव रूपस्य सौन्दर्यं, दृष्ट्वा तृप्तिमनापिवान्।
द्वयक्षः शक्रः सहस्राक्षो, बभूव बहु-विस्मयः॥4॥

अतिशय रूप को देखकर, तृप्त हुआ ना इन्द्र।
सहस्र नेत्र को धार कर, अवलोके मुख चन्द्र॥4॥

ॐ ह्रीं अतिशय-कामदेव-रूपाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहरूपो रिपुः पापः, कषाय - भट - साधनः।
दृष्टि-संपदुपेक्षाऽस्त्रैस्त्वया, धीर! पराजितः।।5।।

मोह रूप रिपु पाप है, योद्धा चार कषाय।
रत्नत्रय दिव्यास्त्र ले, जीता ध्यान लगाय।।5।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय-रूपाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कन्दर्पस्योद्धरो दर्पस्, त्रैलोक्य - विजयाऽर्जितः।
ह्रेपयामास तं धीरे, त्वयि प्रतिहतोदयः।।6।।

कामदेव को दर्प था, लूँगा सबको जीत।
निश्चल मन के पास आ, भागा हो लज्जित।।6।।

ॐ ह्रीं मन्मथ-जिताय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयत्यां च तदात्वे च, दुःख - योनिर्दुरुत्तरा।
तृष्णा-नदी त्वयोत्तीर्णा, विद्या-नावा विविक्तया।।7।।

इह-पर लोक के दुःख को, पार करे ना कोय।
तृष्णा सर धी पोत ले, पार करे जिनराय।।7।।

ॐ ह्रीं इहपरलोक-सुखाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अन्तकः क्रन्दको नृणां, जन्म-ज्वर-सखः सदा।
त्वा-मन्त-कान्तकं प्राप्य, व्यावृत्तः काम-कारतः।।8।।

जन्म जरा ज्वर रोग का, मित्र मरण रुलवाय।
जो तेरी शरणा लहें, जन्म जरा विनशाय।।8।।

ॐ ह्रीं जन्म-जरा-ज्वर-रोग-हराय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूषा-वेषायुध-त्यागि, विद्या-दम-दया-परम्।
रूपमेव तवा चष्टे, धीर! दोष-विनिग्रहम्।।9।।

अस्त्र शस्त्र भूषण रहित, ज्ञान दया दम धार।
रूप आपका कर रहा, मोह दोष क्षयकार।।9।।

ॐ ह्रीं जन्मजरामृत्यु-रोगहराय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समन्ततोङ्गभासां ते, परिवेषेण भूयसा।
तमो बाह्यमपाकीर्णमध्यात्म, ध्यान - तेजसा॥10॥

सर्वओर तन किरण से, अंधकार नश जाए।
आत्म ध्यान के तेज से, उज्ज्वलता छा जाए॥10॥

ॐ ह्रीं आत्मध्यानाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वज्ञ-ज्योतिषोद्भूत-, स्तावको महिमोदयः।
कं न कुर्यात् प्रणम्रं ते, सत्त्वं नाथ! सचेतनम्॥11॥

सर्वज्ञपने की ज्योत से, महिमा बढ़ती जाए।
ज्ञानी सारे झुक रहे, चित्त को उमगाए॥11॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानातिशयाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव वागमृतं श्रीमत्, सर्व-भाषा-स्वभावकम्।
प्रीणयत्यमृतं यद्वत्, प्राणिनो व्यापि संसदि॥12॥

वचनामृत तेरी यहाँ, सर्व भाष स्वभाव।
समवशरण की सभा में, हितकर तव प्रभाव॥12॥

ॐ ह्रीं सर्व-भाषोपदेशकाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकान्तात्मदृष्टिस्ते, सती शून्यो विपर्ययः।
ततः सर्वं मृषोक्तं स्यात्, तदयुक्तं स्वघाततः॥13॥

अनेकान्त मत सत्य हैं, बाकी सब हैं झूठ।
अन्य मतों का कथन सब, अन्यथा मिथ्या मूठ॥13॥

ॐ ह्रीं अनेकान्तधर्म-प्रतिपादकाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परस्खलितोन्निद्राः, स्व-दोषेभ-निमीलिनः।
तपस्विनस्ते किं कुर्युरपात्रं, त्वन्मत-श्रियः ॥14॥

अनेकान्त के ज्ञान से, भागे मत एकान्त।
गज निमिलन दोष से, लख अनदेखी भ्रान्त॥14॥

ॐ ह्रीं एकान्त-विमोचकाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ते तं स्वघातिनं दोषं, शमीकर्तुमनीश्वराः ।
त्वद्विषः स्वहनो, बालास्तत्त्वाऽवक्तव्यतांश्रिताः॥15॥

स्वघातक मत दोष को, दूर करन असमर्थ।
द्वेष करे अनेकान्त से, अज्ञानी तत्वर्थ॥15॥

ॐ ह्रीं सत्यार्थ प्रकाशकाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सदेक-नित्य-वक्तव्यास्त-, द्विपक्षाश्च ये नयाः।
सर्वथेति प्रदुष्यन्ति, पुष्यन्ति स्यादितीह ते॥16॥

नित्येक सद् वक्तव्य है, तद् विपरीत नय जान।
वस्तु तत्व दूषित करे, स्यात् पुष्ट कर मान॥16॥

ॐ ह्रीं वस्तुस्वरूपाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वथानियमत्यागी, यथादृष्टमपेक्षकः।
स्याच्छब्दस्तावके न्याये, नान्येषामात्म विद्विषाम्॥17॥

सर्वथा नियम त्याग कर, यथा दृष्ट सापेक्ष।
स्यात् शब्द उपयोगकर, धारे न कोई द्वेष॥17॥

ॐ ह्रीं द्वेषरहिताय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनेकान्तोऽप्यनेकान्तः, प्रमाण-नय-साधनः।
अनेकान्तःप्रमाणात् ते, तदेकान्तोऽर्पितान्नयात्॥18॥

अनेकान्त अनेकान्त हैं, नय प्रमाण से सिद्ध।
अनेकान्त एकान्त हैं, विवक्षित नय प्रसिद्ध॥18॥

ॐ ह्रीं नयप्रतिपादकाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इति निरुपम-युक्त-शासनः, प्रिय-हित-योग-गुणाऽनुशासनः।
अरजिन! दम-तीर्थ-नायक-स्त्वमिव, सतां प्रतिबोधनाय कः॥19॥

हे जिनेन्द्र! तेरा शासन तो, निरुपम युक्ति युक्त रहा।
प्रियहित योग गुणों से पूरित, मिथ्या दर्शन मुक्त रहा॥
अरहनाथ पंचेन्द्रिय जेता, धर्म तीर्थ के नायक हो।
तेरे सम दुजा ना कोई, बुधजन बोधक ज्ञायक हो॥19॥

ॐ ह्रीं हितमित उपेदशकाय श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मति-गुण-विभवानुरूपत-, स्वयि-वरदागम-दृष्टिरूपतः
गुण-कृशमपि किञ्चनोदितं, मम भवताद् दुरितासनोदितम्॥20॥

मतिमान गुण वैभवधारी, जिन आगम से जान रहा।
अपनी दृष्टि भक्ति से ही, तेरे गुण का गान रहा॥
अंश मात्र गुण वर्णन से तो, किंचित पुण्य कमाया हो।
मेरे भव का ताप हरो प्रभु, अरहनाथ गुण गाया हो॥20॥

ॐ ह्रीं भवक्षयार्थं श्री-अरहनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप॥

ॐ ह्रीं श्री-अरहनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. श्री-मल्लिनाथ भगवान की जय

यस्य महर्षेः सकल-पदार्थ-,
प्रत्यवबोधः समजनि साक्षात्।
साऽमर-मर्त्यं जगदपि सर्वं,
प्राञ्जलि भूत्वा प्रणिपतति स्म॥1॥

महाऋषि श्री-मल्लिनाथ ने, सकल पदारथ बोध किया।
त्रैकालिक वस्तु को लखकर, निज आतम का शोध किया॥
तेरी अनुपम महिमा सुनकर, नर देवा प्राणी आए।
मन पावन कर हाथ जोड़कर, श्री-चरणों में शीश नवाए॥1॥

ॐ ह्रीं महाऋषये श्री-मल्लिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य च मूर्तिः कनकमयीव,
स्व-स्फुरदाभा-कृत-परिवेषा।
वागपि तत्त्वं कथयितुकामा,
स्यात्पद-पूर्वा रमयति साधून्॥2॥

शुद्ध स्वर्ण सा वर्ण आपका, फैलाती है दिव्य प्रभा।
आभामण्डल से परिवेष्ठित, उज्ज्वल तेरी दिव्य विभा॥

दिव्यध्वनि तो तत्व ज्ञान की, अमृतधारा बरसाती।
स्याद् पदों से चिह्नित भाषा, मुनियों के मन हर्षाती॥2॥

ॐ ह्रीं निजमन-प्रमुदिताय श्री-मल्लिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य पुरस्तात् विगलित-माना,
न प्रतितीर्थ्या भुवि विवदन्ते।
भूरपि रम्या प्रतिपदमासी-ज्जात,
विकोशाम्बुज-मृदु-हासा॥3॥

जिन भगवन के सम्मुख विगलित, अहंकार हो जाता है।
भूमि पर कोई ज्ञानी फिर, प्रलाप नहीं कर पाता है॥
धरती पर विहार काल में, जहाँ पड़े पावन चरणन्।
कोमल मुस्कानों से शोभित, विकसित होते दिव्य कमल॥3॥

ॐ ह्रीं अपलाप-विनाशकाय श्री-मल्लिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य समन्ताज्जिन-शिशिरांशोः,
शिष्यक-साधु-ग्रह-विभवोऽभूत।
तीर्थमपि स्वं जनन-समुद्र,
त्रासित-सत्त्वोत्तरण-पथोऽग्रम्॥4॥

बाल ब्रह्मचारी श्री-जिनवर, मल्लिनाथ स्वामी भगवान।
शिष्य साधुगण ग्रह तारों से, परिवेष्ठित ज्यों चन्द्रमहान॥
तीर्थ आपका पावन मनहर, भव्य जीव को तार रहा।
पारावार में जैसे नौका, पथिकजनों को पार करा॥4॥

ॐ ह्रीं बाल-ब्रह्मचर्य-धारकाय श्री-मल्लिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यस्य च शुक्लं परमतपोऽग्नि-
र्ध्यानमनन्तं दुरितमधाक्षीत्।
तं जिन-सिंहं कृतकरणीयं,
मल्लिमशल्यं शरणमितोऽस्मि॥5॥

मल्लिनाथ ने शुक्ल ध्यान की, अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी।
अष्ट कर्म सब नष्ट किया अरुँ, सिद्धालय भूमि वर ली॥
मल्लिनाथ जिन सिंह समाना, शल्य रहित कृत कृत्य हुए।
तेरी शरणा को पाकर सब, आनन्दित और धन्य हुए॥5॥

ॐ ह्रीं मल्लिनाथ-तीर्थंकराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री-मल्लिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. श्री-मुनिसुव्रतनाथ भगवान की जय

अधिगत-मुनि-सुव्रत-स्थिति-
र्मुनि-वृषभो मुनिसुव्रतोऽनघः।
मुनि-परिषदि निर्बभौ भवा-
नुडु-परिषत्परिवीत-सोमवत्॥1॥

महाव्रतों से शोभित मुनिवर, मुनियों के मुनिनाथ कहे।
मुनि सभा में आप विराजे, ताराओं में चन्द्र रहे॥
चार घातियां नाश किया, सर्वज्ञपने को पाया है।
तेरी पूजा भक्ति करके, मन मेरा हर्षाया है॥1॥

ॐ ह्रीं महाव्रत-शोभिताय श्री-मुनिसुव्रतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिणत-शिखि-कण्ठ-रागया,
कृत-मद-निग्रह-विग्रहाऽऽभया।
तव जिन! तपसः प्रसूतया,
गृह-परिवेष-रुचेव शोभितम्॥2॥

कामदेव मद जीत लिया अरुँ, महाव्रतों में अटल रहे।
तन की आभा मोर कण्ठ सम, नीली नीली अचल रहे॥
तप की आभा चारों दिश में, चन्द्र प्रभा सम फैली है।
आराधन तेरी करता मैं, मन धोने जो मैली है॥2॥

ॐ ह्रीं नीलवर्ण-युक्ताय श्री-मुनिसुव्रतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शशि-रुचि-शुचि-शुक्ल-लोहितं,
सुरभितरं विरजो निजं वपुः।
तव शिवमतिविस्मयं यते!,
यदपि च वाङ्मनसीयमीहितम्॥3॥

चन्द्रकान्त या दुग्ध प्रभा सम, निर्मल श्वेत रुधिर पाया।
अतिशय रूप सुगन्धित तन पा, स्वेद खेद सब विनशाया॥
शिव स्वरूप सम सुन्दर विस्मित, शान्त सरल मुनिराज अहो।
विस्मयकारक शुभ मन वच की, क्रिया कलाप ऋषिराज कहो॥3॥

ॐ ह्रीं अष्टादश-दोषरहिताय श्री-मुनिसुव्रतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थिति-जनन-निरोध-लक्षणं,
चरमचरं च जगत् प्रतिक्षणम्।
इति जिन! सकलज्ञ-लाञ्छनं,
वचनमिदं वदतां वरस्य ते॥4॥

हे जिनेन्द्र! तव दिव्य वचन से, जड़ चेतन परिभाषित है।
बनना मिटना और ध्रौव्यता, स्वाभाविक अनुशासित है॥
आप समां ना उद्घोषक है, जग प्राणी की भाषा में।
सर्वज्ञपने का द्योतक ये सब, ज्ञान ध्यान दृग नासा में॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वभाषात्मक-दिव्यध्वनि-उपदेशकाय श्री-मुनिसुव्रतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूरित-मल-कलङ्कमष्टकं,
निरुपम-योग-बलेन-निर्दहन्।
अभवदभव-सौख्यवान् भवान्,
भवतु ममापि भवोपशान्तये॥5॥

अपने अनुपम योग बलों से, अष्ट कर्म का नाश किया।
जगतातीत अतिन्द्रिय सुख से, सिद्धालय में वास किया॥
आप समागम को पाकर के, निर्मल मन हर्षित होवें।
भव भ्रमण को शान्त करो प्रभु, दिव्य ध्वनि मुखरित होवें॥5॥

ॐ ह्रीं सिद्ध-स्वरूपाय श्री-मुनिसुव्रतनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री-मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. श्री-नमिनाथ भगवान की जय

स्तुतिः स्तोतुः साधोः कुशल-परिणामाय स तदा,
भवेन् मा वा स्तुत्यः, फलमपि ततस्तस्य च सतः।
किमेवं स्वाधीन्याज्जगति सुलभे श्रायस-पथे,
स्तुयान्न त्वा विद्वान्, सततमभिपूज्यं नमि-जिनम्॥1॥

स्तुति जिनवर के चरणों की, शुभ परिणाम जगाती है।
देव रहे ना रहे वहाँ पर, फलीभूत हो जाती है॥
निज आतम कल्याण सुलभपथ, कौन विवेकी छोड़ेगा।
नमिनाथ की स्तुति करके, अन्तर्मन को जोड़ेगा॥1॥

ॐ ह्रीं शुभपरिमाण-जागृताय श्री-नमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वया धीमन्! ब्रह्म-प्रणिधि-मनसा जन्म-निगलं,
समूलं निर्भिन्नं, त्वमसि विदुषां मोक्ष-पदवी।
त्वयि ज्ञान-ज्योतिर्विभव-किरणैर्भाति भगवन्,
नभूवन खद्योता, इव शुचिरवावन्यमतयः॥2॥

मन स्थिर कर श्रेष्ठ ज्ञान धर, आत्म स्वरूप को पाया है।
पुनर्जन्म के बन्धन तोड़े, मोक्ष मार्ग विकसाया है॥
केवलज्ञान की दिव्य ज्योत से, प्रभाहीन सब मत होते।
सूर्यप्रभा के सम्मुख जुगनु, अपनी आभा को खोते॥2॥

ॐ ह्रीं मनस्थिराय श्री-नमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधेयं वार्यं चाऽनुभयमुभयं मिश्रमपि तद्,
विशेषैः प्रत्येकं, नियम-विषयैश्चापरिमितैः।
सदाऽन्योऽन्यापेक्षैः, सकल-भुवन-ज्येष्ठ-गुरुणा,
त्वया गीतं तत्त्वं, बहु-नय-विवक्षेतर-वशात्॥3॥

तीन लोक के ज्येष्ठ गुरुवर, नयधारा से तत्व कहे।
एक दूजे की सदा अपेक्षा, सप्त भंग से सत्व रहे॥
निज पर कारण अस्ति नास्ति, मिश्र अनुभय कथन करो।
बोल सके ना बोल सके सब, उभय रूप सद्वचन कहो॥3॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ-गुरुवे श्री-नमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसा भूतानां, जगति विदितं ब्रह्म परमं,
न सा तत्रारम्भोऽस्त्यणुरपि च यत्राश्रमविधौ।
ततस्तत्सिद्धर्थं, परम-करुणो ग्रन्थमुभयं,
भवानेवात्याक्षीन् न च विकृत-वेषोपधि-रतः॥4॥

धर्म अहिंसा सभी जीव की, रक्षा करता ब्रह्म महा।
जहाँ कहीं आरंभ अणुभर, पूर्ण अहिंसा नहीं वहाँ॥
सर्व अहिंसा सिद्धि हेतु, द्विधा संग का त्याग करो।
परम दयालु जिन मुद्राधर, अन्य वेश परित्याग करो॥4॥

ॐ ह्रीं पूर्णअहिंसाधर्म-प्रगटाय श्री-नमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वपुर्भूषा-वेष-व्यवधि-रहितं शान्त-करणं,
यतस्ते संचेष्टे, स्मर-शर-विषाऽऽतङ्क-विजयम्।
बिना भीमै, शस्त्रैरदय-हृदयामर्ष-विलयं,
ततस्त्वं निर्मोहः, शरणमसि नः शान्ति-निलयः॥5॥

सुन्दर तन वस्त्राभूषण तज, शान्त किए सब विषय विकार।
कामदेव आतंक मचाए, शील बाण से किया संहार॥
अस्त्र शस्त्र से रहित हृदय से, क्रूर क्रोध का नाश किया।
निर्मोही हे शरण प्रदाता, शान्ति निलय में वास किया॥5॥

ॐ ह्रीं शरणागत-वत्सलाय श्री-नमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री-नमिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. श्री-नेमिनाथ भगवान की जय

भगवानृषिः परम - योग - दहन - हुत - कल्मषेन्धनः।
ज्ञान-विपुल-किरणैः सकलं प्रतिबुद्धय बुद्ध-कमलायतेक्षणः॥1॥

हे ऋषिवर जी परम योग से, दहन किया सब कल्मषता।
केवल ज्ञान की किरणें पाकर, प्रभु हुए हर तामसता।
प्राणीमात्र को अभय दान दें, स्वाभाविक विहार किया।
दिव्य ध्वनि सुन भव्य जीव नें, निज आतम उद्धार किया।।1।।

ॐ ह्रीं सर्वतोभद्र विहारी श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हरिवंश - केतुरनवद्य - विनय - दम - तीर्थ - नायकः।
शील-जलधिरभवो विभीवस्त्वमरिष्टनेमि-जिनकुञ्जरोऽजरः।।2।।

वृहद कमल सम नयन मनोहर, हरिवंश के राज्य प्रधान।
इन्द्रियजेता विनय प्रणेता, जिन कुञ्जर नेमि गुणखान।
धीर वीर गंभीर युवापन, दिव्यरुप मोहित करता।
आदर्शों के शिखर बने श्री, नेमिनाथ सब दुख हरता।।2।।

ॐ ह्रीं हरिवंश कुल तिलक श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिदशेन्द्र-मौलि-मणि-रत्न-किरण-विसरोपचुम्बितम्।
पाद-युगलममलं भवतो, विकसत्कुशेशय-दलाऽरुणोदरम्।।3।।

मुकुट मणि की किरण आपके, चरण कमल को छूती हैं।
पाद युगल में अमल भाव से, रक्त कमल सी शोभित है।
सौ इन्द्रों से पूज्य जिनेश्वर, तीन लोक को निरख रहें।
सबको जाने सब ना जानें, यही ज्ञान में फर्क कहें।।3।।

ॐ ह्रीं शतेन्द्र पूजित श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नख-चन्द्र-रश्मि-कवचाऽति-रुचिर-शिखराऽङ्गुलि-स्थलम्।
स्वार्थ-नियत-मनसः सुधियः, प्रणमन्ति मंत्र-मुखरा महर्षयः।।4।।

पद अंगुष्ठ के अग्रभाग को, चन्द्र किरण सम चमकाया।
मंत्र मुखर हो प्रखर भाव सें, मुनिगण नमकर यश गाया।।
चरणों का सेवक बनकर जो, मोक्ष मार्ग को स्वीकारे।
कर्मातीत निराकुल सुख पा, निज आतम को श्रृंगारें।।4।।

ॐ ह्रीं कर्मारिध्वंसी श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्युतिमद्रथाङ्ग-रवि-बिम्ब-किरण-जटिलांशुमण्डलः।
नील-जलद-जल-राशि-वपुः सह बन्धुभिर्गरुडकेतुरीश्वरः॥5॥

नील वर्ण के धारी होकर, सूर्य बिम्बसम चक्र धरा।
गरूड़ चिन्ह ही ध्वजा थी प्यारी, तीन खण्ड के स्वामी कहा॥
नारायण भी भक्ति में नित, पारायण हो कर जोड़े।
तीर्थंकर के सम्मुख रहकर द्वन्द क्लेश बन्धन तोड़े॥5॥

ॐ ह्रीं त्रिखण्डाधिपति नारायण पूजिताय श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हलभृच्च ते स्वजनभक्ति-मुदित-हृदयौ जनेश्वरौ।
धर्म-विनय-रसिकौ सुतरां, चरणारविन्द-युगलं प्रणेमतुः॥6॥

हलधर धारी भाई बन्धु सब, प्रभुदित हो भक्ति करते।
धर्म विनय से रसिक परिजन, नेमिनाथ को नित नमते॥
संबंधो की गहरी दुनियाँ, मोह भाव से चलता हैं।
स्वर्ग नरक निजभावों का फल, सभी जीव को मिलता हैं॥6॥

ॐ ह्रीं बलभद्र पूजिताय श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ककुदं भुवः खचरयोषि-दुषित-शिखरै-रलङ्कृतः।
मेघ-पटल-परिवीत-तटस्त्व, लक्षणानि लिखितानि वज्रिणा॥7॥

विद्याधर नारी से सोवित, वृषभ कंध सी शोभ रहे।
अग्रभाग भू ऊँचा सोहे, मेघ पटल से घिरा रहें।
जुनागढ़ शादी बंधन तज, पशुओं की चित्कार सुनि।
भोग वधु तज दीक्षा धारी, वीतरागता राह चुनि॥7॥

ॐ ह्रीं विवाह काले वैराग्य प्रस्फुटिताय श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वहतीति तीर्थमृषिभिश्च, सततमभिगम्यतेऽद्य च।
प्रीति-वितत-हृदयैः परितो, भृशमूर्जयन्त इति विश्रुतोऽचलः॥8॥

इन्द्रो से चिन्हाकिंत पर्वत, तीर्थ साधु से पूजित हैं।
ऊजर्यन्त से मोक्ष पधारें, नेमिनाथ जग वन्दित हैं॥

समवशरण में दिव्य ध्वनि में, मुनि महिमा उपदेश दिया।
शेष बचे दो मिटे द्वारिका, व्यसन मुक्त संदेश दिया॥8॥

ॐ ह्रीं गिरनार गिरी मुनि प्राप्ताय श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहिरन्तरप्युभयथा च, करणमविघाति नाऽर्थकृत्।
नाथ! युगपदखिलं च सदा, त्वमिदं तलाऽऽमलकवद्-विवेदिथ॥9॥

तीन लोक अरू तीन काल को, हस्त मणि सम जान लिया।
मन इन्द्रिय जो भीतर बाहर, बाधा ना कुछ काम किया॥
विघ्न विनाशी अविनाशी जिन, जीवमात्र के हे हितकार।
चरण वन्दना भक्ति पूर्वक, है जिन शासन के आधार॥9॥

ॐ ह्रीं सर्वागम श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अत एव ते बुध-नुतस्य, चरित-गुणमद्भुतोदयम्।
न्याय-विहितमवधार्य जिने, त्वयि सुप्रसन्न-मनसः स्थिता वयम्॥10॥

अद्भूत गणधर अभ्युदय से, न्यायागम चारित्राधार।
सुरभित मन भक्ति पूर्वक प्रभु, पाया तेरा शरणाधार॥
निराकार चैतन्य विहारी, क्षायिक दान सदा करते।
नेमिनाथ की स्तुति करता, नित्य निरामय सुख वरतें॥10॥

ॐ ह्रीं चेतन्य विहारिणे श्री नेमिनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री-नेमिनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. श्री-पार्श्वनाथ भगवान की जय

तमाल-नीलैः सधनुस्तडिद्गुणैः,
प्रकीर्ण-भीमाऽशनि-वायु-वृष्टिभिः।
बलाहकैर्वैरि - वशैरुपद्रुतो,
महामना यो न चचाल योगतः॥1॥

तमाल वृक्ष सम नील गगन से, विद्युत गर्जन वज्रापात।
महाभंयकर आँधी वर्षा, शत्रुभाव से तीव्राघात।।
पूर्व जन्म का बैर जानकर, तप में बाधक बन आया।
महामना पारस स्वामी का, शुक्लध्यान ना डिग पाया।।1।।

ॐ ह्रीं उपसर्ग-विजिताय श्री-पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बृहत्फणा-मण्डल-मण्डपेन यं,
स्फुरत्तडित्पिङ्ग-रुचोपसर्गिणम्।
जुगूह नागो धरणो धराधरं,
विराग-संध्या-तडिदम्बुदो यथा।।2।।

वृहद् फणों से युक्त देवता, मण्डल मण्डप रच दीना।
पीत वर्ण की आभा लेकर, मुनिवर को वेष्ठित कीना।।
जैसे मावस की बेला में, तड़ित गिरि को घेर रहा।
नागदेव धरणेन्द्र निकट आ, सेवा कर भव फेर रहा।।2।।

ॐ ह्रीं दिव्यशक्ति-सम्पन्नाय श्री-पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्व-योग-निस्त्रिंश-निशात-धारया,
निशात्य यो दुर्जय-मोह-विद्विषम्।
अवापदाऽऽर्हन्त्यमचिन्त्यमद्भुतं,
त्रिलोक-पूजाऽतिशयाऽऽस्पदं पदम्।।3।।

शुक्ल ध्यान की खड्ग धार से, दुर्जय मोह शत्रु मारा।
विस्मयकारी गुण धारण कर, पद अचिन्त्य अर्हत धारा।।
पार्श्वनाथ हितकारी भगवन, अतिशय से परिपूर्ण हुए।
उपसर्गों में कर्म जीत कर, केवलज्ञान से पूर्ण हुए।।3।।

ॐ ह्रीं स्थिर-योगात्मने श्री-पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यमीश्वरं वीक्ष्य विधूत-कल्मषं,
तपोधनास्तेऽपि तथा बुभूषवः।
वनौकसः स्व-श्रम-वन्ध्य-बुद्धयः,
शमोपदेशं शरणं प्रपेदिरे।।4।।

तेरे तप की महिमा लखकर, जिनवर रूप में दर्श किया।
अपने मिथ्या तप को तजकर, तव शरणा सहर्ष लिया॥
मिथ्या तप की सतत साधना, जगति में भटकाती है।
पार्श्व प्रभु की दिव्य ध्वनि तो, सम्यकपथ बतलाती है॥4॥

ॐ ह्रीं सम्यकमार्ग-दर्शिकार्ये श्री-पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स सत्य-विद्या-तपसां प्रणायकः,
समग्रधीरुग्रकुलाऽम्बरांशुमान्।
मया सदा पार्श्वजिनः प्रणम्यते,
विलीन-मिथ्यापथ-दृष्टि-विभ्रमः॥5॥

सम्यक विद्या सम्यक तप का, मार्ग आप बतलाते हो।
उग्रवंश के दिव्य चन्द्रमा, केवलज्ञानी कहाते हो॥
मिथ्यामत दृष्टि विभ्रम से, मुझको जिनवर मुक्त करो।
पार्श्व प्रभु की सदा वन्दना, रत्नत्रय से युक्त करो॥5॥

ॐ ह्रीं विभ्रम-विनाशनाय श्री-पार्श्वनाथाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री-पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. श्री-महावीर भगवान की जय

कीर्त्या भुवि भासि तया,
वीर! त्वं गुण-समुच्छ्रया भासितया,
भासोडुसभा - ऽऽसितया,
सोम इव व्योम्नि कुन्द-शोभासितया॥1॥

यश की किरणें सब जग फैलीं, निर्मल गुणधारी भगवान!
कुन्द पुष्प-सी श्वेत कान्ति ले, चन्द्र शोभता गगन महान॥
वीर नाम शक्ति का द्योतक, मेरु पर्वत पर पाया।
इन्द्र देव भी बाल रूप में, अन्तिम तीर्थंकर पाया॥1॥

ॐ ह्रीं सुमेरुपर्वत-पाण्डुकशिला-मध्ये वीरनाम-धारकाय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तव जिन! शासन-विभवो,
जयति कलावपि गुणाऽनुशासन-विभवः।
दोषक - शासन-विभवः,
स्तुवन्ति चैनं प्रभा-कृशासनविभवः॥2॥

जिन शासन का अनुशासन तो, कलिकाल जयवन्त रहा।
भव्य जीव को हितकर मनहर, पद तेरा अरहन्त रहा॥
ज्ञान श्रेष्ठ पा दोषक मत की, गरिमा को कृश करते हैं।
गणधर बनकर गौतम स्वामी, तव चरणों में रहते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं गणधरसेवित-जिनशासन-महिमा-प्रदर्शकाय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवद्यः स्याद्वादस्तव
दृष्टेष्टाऽविरोधतः स्याद्वादः।
इतरो न स्याद्वादो,
स द्वितय-विरोधान्मुनीश्वराऽस्याद्वादः॥3॥

स्याद्वाद अनेकान्त मयी तव, दोष रहित शुभ वाणी है।
नहीं विरोधाभास है इसमें, दृष्ट इष्ट गुण खानी है॥
वचन शब्द है स्यात् सहारा, वस्तु तत्व प्रतिपादक है।
एकान्तवाद से करे किनारा, वर्धमान जिन साधक है॥3॥

ॐ ह्रीं स्याद्वाद-प्रतिपादकाय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वमसि सुरासुर - महितो,
ग्रन्थिकसत्त्वाऽऽशयप्रणामाऽमहितः।
लोक - त्रय - परमहितो,
ऽनावरणज्योतिरुज्ज्वलद्धाम-हितः॥4॥

देव सुरासुर भक्ति करते, मिथ्या दृष्टि भाग रहें।
रागी द्वेषी सम तव पूजा, नहीं करे जो जाग रहें॥
तीन लोक के परम हितैषी, मोक्ष मार्ग विस्तारक हो।
अतिवीर शुभ नाम तिहारा, केवल ज्ञान के धारक हो॥4॥

ॐ ह्रीं अतिवीरनाम प्राप्ताय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभ्यानामभिरुचितं, दधासि,
गुण - भूषणं, श्रिया चारु - चितम्।
मग्नं स्वस्यांतं रुचितं,
जयसि, च मृगलाञ्छनं स्वकान्त्या रुचितम्॥5॥

समवशरण में तेरी मूरत, भव्य जीव मन उमगाते।
प्रतिहार्य शुभ आठ सजे हैं, महिमा तेरी बतलाते॥
अपने तन की प्रखर प्रभा से, मृग लांछन को जीत रहे।
शेर चिह्न से जाने जाते, महावीर मन मीत रहे॥5॥

ॐ ह्रीं संगमदेव-विजिताय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्वं जिन! गत-मद-माय-
स्तव भावानां मुमुक्षु-कामद! मायः।
श्रेयान् श्रीमदमाय
स्त्वया समादेशि स प्रयाम-दमाऽयः॥6॥

हे प्रभु! तेरे मन मन्दिर में, ना माया ना मान रहा।
भव्यजीव भक्ति करते जो, मद माया से मुक्त कहा॥
जग लक्ष्मी तज मोक्ष लक्ष्मी वर, ऐसा शुभ सन्देश दिया।
प्रामाणिक जो ज्ञान आपका, मोक्ष मार्ग उपदेश दिया॥6॥

ॐ ह्रीं सागार-अनगार-धर्म-प्रतिपादकाय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गिरि- भित्त्य- वदानवतः,
श्रीमत इव दन्तिनः स्रवद्दानवतः।
तव शम-वद्दानवतो,
गतमूर्जितमपगत-प्रमादानवतः॥7॥

पर्वत कोण को खण्डित करता, झरता मद अभिमानी है।
बलशाली गज चले निरन्तर, नहीं कोई परेशानी है॥
सर्व प्राणी को अभय दान दें, समवशरण विहार किया।
दोष रहित सब बने निरन्तर, ऐसा सन्मति ज्ञान दिया॥7॥

ॐ ह्रीं शंका-समाधान-प्रदाताय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुगुण - सम्पदसकलं,
परमतमपि मधुर-वचन-विन्यास-कलम्।
नय-भक्त्यवतं - सकलं,
तव देव! मतं समन्तभद्रं सकलम्॥8॥

मधुर वचन हितकर आकर्षी, महा गुणों की खान रहा।
अन्य मति गुण सहित हुए ना, आतम का कुछ ज्ञान रहा॥
सप्त नयों के आभूषण से, ज्ञान आपका शोभित है।
समन्तभद्र सम हितकारी बन, 'सौरभसागर' सुरभित है॥8॥

ॐ ह्रीं दिव्य-सहस्रगुण-धारकाय जिनशासन-नायकाय श्री-महावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री-महावीर-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापूर्णार्घ्य

सर्व शब्द को जोड़कर, सर्व स्वरों में गाय।
सर्व वाद्य से भक्ति मय, जिनवर पूज रचाय॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम॥
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है॥
तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर 'सौरभ' शीश झुकाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण विराजित सर्व मुनिवरों का अर्घ्य

चार परम गुरु साधक सन्ता, पुलाक वकुश कुशील निर्ग्रन्था।
स्नातक है पंचम मुनिवर, समझो साक्षात् हैं जिनवर।।

तीर्थंकर के समवशरण में, चार संघ हैं सदा चरण में।
ऋषि मुनि हो या यति अनगारा, धर्म धुरन्धर करे भव पारा।।

अर्घ्य चढ़ाऊँ मुनिवर ध्याऊँ, व्रतदीक्षा ले कर्म खपाऊँ।
पूजा कर मैं पुण्य कमाऊँ, धीरे-धीरे जिन पद पाऊँ।

विनती मेरी सुन लो मुनिवर, हमको तारो मन निर्मल कर।
भक्ति से शक्ति बढ़ जाए, चरणों में नत अर्घ्य चढ़ाएँ।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-समवशरण-स्थित एकहजारचारसौबावन-गणधर एवं अट्ठाइसलाखअड़तालिसहजार पंचप्रकार-सर्व-मुनिश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सम्पूर्ण महापूर्णार्घ्य

अतिशयकारी तारण हारी, तीर्थंकर चौबीस महान।
समता धारूँ निज को निखारूँ, अर्घ्य चढ़ा धर तेरा ध्यान।।
कोप हरो मम शोक हरो प्रभु, धर्म ध्यान विकसित कर दो।
वीतरागता प्रगट करूँ प्रभु, अन्तर्मन प्रमुदित कर दो।।

ॐ ह्रीं वृषभादि-महावीर-पर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः (9 बार या 108 बार)

(नोटः-त्रिकाल चौबीसी का अर्घ चढ़ाना चाहे तो पेज नं-87 देखें)

जयमाला

दोहा– **तीर्थंङ्कर चौबीस जिन-सदा करे कल्याण**
निज आतम दर्शन मिले-सिद्धालय विश्राम।

अविनश्वर अविकारी जिनवर, तत्व ज्ञान के हे भण्डार।
आत्म ध्यान में निज को लखते, लखकर भी सारा संसार।।1।।

मोह नहीं वे मोक्ष विराजें, जो पाया वह है पर्याप्त।
कर्म नशा धर नासा दृष्टि, पूज्य बने कर कर्म समाप्त।।2।।

क्षायिक नवलब्धि के धारी, स्वयं स्वयंभू कहलाते।
सोलह कारण भावना भाकर, तीर्थंकर पद को पाते।।3।।

दुर्लभ मानुष जन्म है पाया, ना इसको बेकार करूँ।
पाप विकारी भाव तजूँ मैं, पुण्य भाव स्वीकार करूँ।।4।।

गुण पर्ययवद् द्रव्यं जानो, नय निक्षेप प्रमाण विचार।
स्याद्वाद अनेकान्तमयी वह, धर्म अहिंसा प्राणाधार।।5।।

स्तुतिकर्ता स्तुति करते, जो स्तुत्य कहाता है।
स्तुति का फल भले न चाहे, फलीभूत हो जाता है।।6।।

ना रोऊँ ना दुख को बोलूँ, ना मागूँ वैभव संसार।
ना रूठूँ ना उन्हें मनाऊँ, जिनवर तो जगती के पार।।7।।

ना देते अभिशाप किसी को, ना देते वे आशीर्वाद।
फिर भी भक्ति जो भी करता, लेता इह परभव को साध।।8।।

प्रातः सूरज उगकर क्षण में, तम हरता जागृत करता।
दिनभर चलकर सर्व जीव को, उत्साहित शक्ति भरता।।9।।

जिनवर के दर्शन कर प्रातः, अन्तर आतम चमकेगा।
पाप बहिर्मुख हर क्षण होकर, धर्म भाव सब पनपेगा।।10।।

मंगल कारी जिनवर दर्शन, धर्म मार्ग का प्रथम चरण।
संस्तुति भक्ति करलो मन से, मिट जाएगा जन्म मरण।।11।।

चौबीसों तीर्थंकर मनहर, परम पूज्य हैं मंगलधाम।
श्रद्धा लोक के देव यही हैं, वीतरागी जिनवर भगवान।।12।।

ऋषभ नाथ हे आदि जिनेशा, अन्तस् कल्मषता धो दो।
अजित नाथ हे कर्म विजेता, दिव्य ध्यान शक्ति दे दो।।13।।

संभव जिनवर भवभय हर्ता, समता क्षमता पा जाऊँ।
अभिनन्दन का वन्दन करके, निज गुण वैभव प्रगटाऊँ।।14।।

सुमतिनाथ शुभ ज्ञान प्रदाता, सद् बुद्धि जागृत कर दो।
पद्मप्रभु गुण सरवर भीतर, आत्म कमल विकसित कर दो।।15।।

दया क्षमा से युक्त जिनेश्वर, नाम सुपारस पाया है।
चन्द्रप्रभु की शीतल रश्मि, रोम रोम चमकाया है।।16।।

अन्तश्चेतना के संवाहक, पुष्पदन्त प्रभु कहलाते।
रागादिक सब दोष हरो प्रभु, शीतल गुण गौरव गाते।।17।।

उलझन मन की हर लेना प्रभु, तीर्थंकर श्री नाथ श्रेयांस।
वासुपूज्य है बाल ब्रह्म जिन, संयम के मेरु दिव्यांश।।18।।

मन सुख दायक विमलनाथ जी, अन्तर्मन को विमल करो।
दोष अनन्तानन्त हृदय में, अनन्तनाथ जी रिक्त करो।।19।।

धर्म ध्यान की शक्ति पाकर, धर्मनाथ नित ध्यान करूँ।
शान्तिनाथ चंचलता मेटो, भव भ्रमण को शान्त करूँ।।20।।

कुन्थुनाथ जी ध्यान धुरन्धर, शुद्धातम में लीन रहे।
अरहनाथ अरिकुल के नाशक, परम योग परवीन रहे।।21।।

बाल ब्रह्मचारी जिनवर हैं, मल्लिनाथ निष्काम महान।
मुनिसुव्रत मन मौन करा दो, कर्मास्रव का होवे हान्।।22।।

नमिनाथ निज गुण प्रगटा दो, आत्म रूप में खो जावे।
नेमिनाथ के तेज पुँज से, ज्योतिर्मय जीवन होवे।।23।।

आकुलता में रस निज खोया, पारस रस पा परम बनूँ।
महावीर का सत्पथ पाकर, निज आतम कल्याण करूँ।।24।।

दोहा

विनती 'सौरभसागर' की, सुन लेना जिनराज।
जीवन हितकर हो सदा, देना आशीर्वाद।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वाद

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान।।
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल।।
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा।।
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार।।
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है।।
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता।।

तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है॥1॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर॥
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा॥2॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई॥
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा॥3॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी॥
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया॥4॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना॥
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि॥5॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है॥
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी॥
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा॥
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें॥
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें॥
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ॥

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक आदिनाथ जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर निर्वाण भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश॥
आने वाले महापद्म जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया॥
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम॥
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं॥

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[3] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं॥
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[4] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकरः–नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान।।
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार।।
प्रोष्ठिल[1] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[2], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[1] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[2] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[3] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें।।
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान।।
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है।।
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[5] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।
5. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[1] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें।।
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

बेरी का उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

अर्घ्यावली

समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया।।
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता।।

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली

(चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ नं. 83 पर देखें)

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।।
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है।।

तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया।।
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला।।
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें।।

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो।।
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नम: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी का अर्घ्य

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष॥

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता॥
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं॥
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं॥

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों॥1॥
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी॥2॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा॥3॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ॥4॥
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा॥5॥

चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के॥6॥

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय॥7॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे..... मासे.....शुभे.....पक्षे शुभ.....तिथौ..... .....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें।।1।।

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक।।2।।

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।।3।।

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को।।4।।

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप।।5।।

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे।।6।।

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी।।7।।

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज।।8।।

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का।।9।।

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ।।10।।

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।
उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,

अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रमु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।
मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,

पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ॥
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों॥
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों॥1॥
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा॥2॥
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो॥
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया॥3॥
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें॥
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें॥4॥
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ॥
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे॥5॥
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं॥
जन्म मरण की भ्रमण शृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये॥6॥
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो॥
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे॥7॥

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें॥
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी॥8॥
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥9॥

दोहा– अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥10॥

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती॥
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान॥11॥
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो॥
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥14॥

धत्ता– जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।

उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम।।
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई।।
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे।।
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं।।

धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं।।
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए।।
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार।।

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे।।
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए।।

गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था।।1।।

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था।।
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे।।2।।

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया।।
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया।।3।।

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे।।
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए।।4।।

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति।।
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है।।5।।

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है।।
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया।।6।।

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था।।
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए।।7।।

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री सौरभ सागरजी का अर्घ

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन शृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्यगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

आरती

जय हो श्री सौरभसागर
जय हो गुरू ज्ञान दिवाकर
हम सब उतारे तेरी आरती
हे गुरूवर हम सब उतारे तेरी आरती
चन्द्रप्रभा श्रीपाल ने तुमको नाम सुरेन्द्र दीना
गुरूवर नाम सुरेंद्र दीना
पुष्पदंत ने सुरभित करके-2 सौरभसागर कीना
जग पर सुरभि लूटाने वाले जीवन महकाने वाले
हम सब उतारे तेरी आरती
हे गुरूवर हम सब उतारे तेरी आरती
राग -द्वेष को छोड़के हो गये
वीतरागी ये त्यागी - गुरूवर वीतरागी ये त्यागी
शिवपुर के महाराज बनेगे-2
मुक्ति तू बडभागी रे-ऋषिवर संयम को धरने वाले
मुक्ति को वरने वाले हम सब उतारे तेरी आरती-
हे मुनिवर हम सब उतारे तेरी आरती
सौरभाँचल सिद्धांत शतक सी हमको दे दी निधियाँ-
गुरूवर हमको दे दी निधियाँ
ध्यान लगा मूरत बतलाई -2
तीरथ कर दी नसियाँ
मनहर अतिशय दर्शाने वाले
महिमा दिखाने वाले हम सब उतारे तेरी आरती
हे मनुहर हम सब उतारे तेरी आरती
जगमग ज्योत जले तेरे दर पर भक्तों की दिवाली
तेरे भक्तों की दिवाली
जो भी माँगो सोही मिलेगा-2
कोई ना जायेगा खाली
सबकी झोली को भरने वाले
करूणा बरसाने वाले मुनिवर मेरे जसपुर वाले
हम सब उतारे तेरी आरती-
हे प्रभुवर हम सब उतारे तेरी आरती
जय हो श्री सौरभसागर
जय हो गुरू ज्ञान दिवाकर-हम सब उतारे तेरी आरती
हे गुरूवर हम सब उतारे तेरी आरती

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म	: कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
	22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)
बचपन का नाम	: सुरेन्द्र कुमार
पिता का नाम	: श्री श्रीपाल जैन
माता का नाम	: श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन
गृहत्याग	: शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983
क्षुल्लक दीक्षा	: शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	: सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)
मुनि दीक्षा	: 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)
दीक्षा गुरु	: पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज
आचार्य पद	: 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)
राजकीय अतिथि	: झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

:: पुण्यार्जक ::

मनोज कुमार जैन, ललित जैन, अतिशय जैन, अर्पण जैन
मै. पारसनाथ पोली बटन, दिल्ली-110031 मो.: 9810056286

मुकेश जैन, सौरभ जैन (सौरभसागर फैब्रिक्स)
बिहारी कॉलोनी, दिल्ली

श्री शिवसेन जैन, पंकज जैन, धीरज जैन
बलबीर नगर, दिल्ली

श्रीमती रेनू जैन श्री संजय जैन
(पुत्र स्व. माताजी श्रीमती ऊषा जैन की 8वीं पुण्यतिथि पर)
108 "सौरभांचल" पुष्पांजलि, दिल्ली

श्रीमती सुदेश जैन धर्मपत्नी स्व. श्री अनिल कुमार जैन
गौरव जैन, खुशबू जैन
अंसारी रोड़, दरियागंज, दिल्ली

विपुल जैन, पारस जैन (चिलकाना वाले)
आजाद नगर, दिल्ली

श्री सुभाष चन्द जैन, अचिन जैन, अंकित जैन (उमरपुर वाले)
बलबीर नगर, दिल्ली

प्रवीण जैन, दीपक जैन, अक्षत जैन (खेकड़ा वाले)
बलबीर नगर, दिल्ली

पवन जैन, गौरव जैन, निक्षेप जैन (शामली वाले)
महावीर ओवरसीज, दिल्ली

सतीश जैन, देवेश जैन (ककडीपुर वाले)
लक्ष्मी नगर, दिल्ली

उमेश जैन सीमा जैन
कृष्णा नगर, दिल्ली

सचिन जैन, विकास जैन, गौरव जैन
ए-37, सूरजमल विहार, दिल्ली

विकास जैन निधि जैन
कृष्णा नगर, दिल्ली

नीलू जैन, श्रीमती कल्पना जैन, श्री रवि कुमार जैन
नया बाजार, ग्वालियर

प्रदीप कुमार जैन, मंजू जैन, अक्षय जैन, आरुषि जैन, अवन्या जैन
सूर्य नगर, दिल्ली

मुकेश जैन, प्रीति जैन, दर्शित जैन, सुन्ह जैन
भोलानाथ नगर, दिल्ली

पवित्र जैन (जय पारस गोल्डटच सेन्टर)
कृष्णा नगर, दिल्ली

श्रीमती मीना जैन धर्मपत्नी स्व. श्री ओमप्रकाश जैन (बट्टनलाल)
श्री मनोज जैन, श्रीमती मंजू जैन, मनीष जैन
(भिण्ड वाले)

चिन्मय जैन सुपुत्र दीपक जैन (चिंकी हौजरी)

ईस्ट आजाद नगर, कृष्णा नगर, दिल्ली
धनकुमार जैन, प्रणय जैन, ध्वनि जैन, सुविज्ञ जैन
बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली

राजीव जैन, अमन जैन, यशी एंटरप्राइज (Campio Files)
शंकर नगर, दिल्ली

श्रीमती आभा जैन, श्री नीरज जैन, प्रक्षाल जैन, सिद्धार्थ जैन
हंस वाटिका, रेलवे रोड, शान्ति नगर, मेरठ

श्रीमती अर्चना जैन श्री अनिल जैन
रघुवरपुरा, दिल्ली

जिन पूजन संगठन
मेरठ

पंकज जैन नलिनी जैन
ए-141, सूरजमल विहार, दिल्ली

स्व. श्री श्रीमंदर जैन की स्मृति में (पुत्र अजय जैन रीना जैन)
डी-107, सूरजमल विहार, दिल्ली

जे. पी. जैन अमित जैन पल्लवी जैन
पुष्पांजलि, दिल्ली

श्रीमती कमला जैन
ए-141, सूरजमल विहार, दिल्ली

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No.	: 45922900000921
A/c Name	: SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank	: DCB BANK LIMITED
IFSC Code	: DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्रगटित 1008
श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी जी गंगनहर, मुरादनगर

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

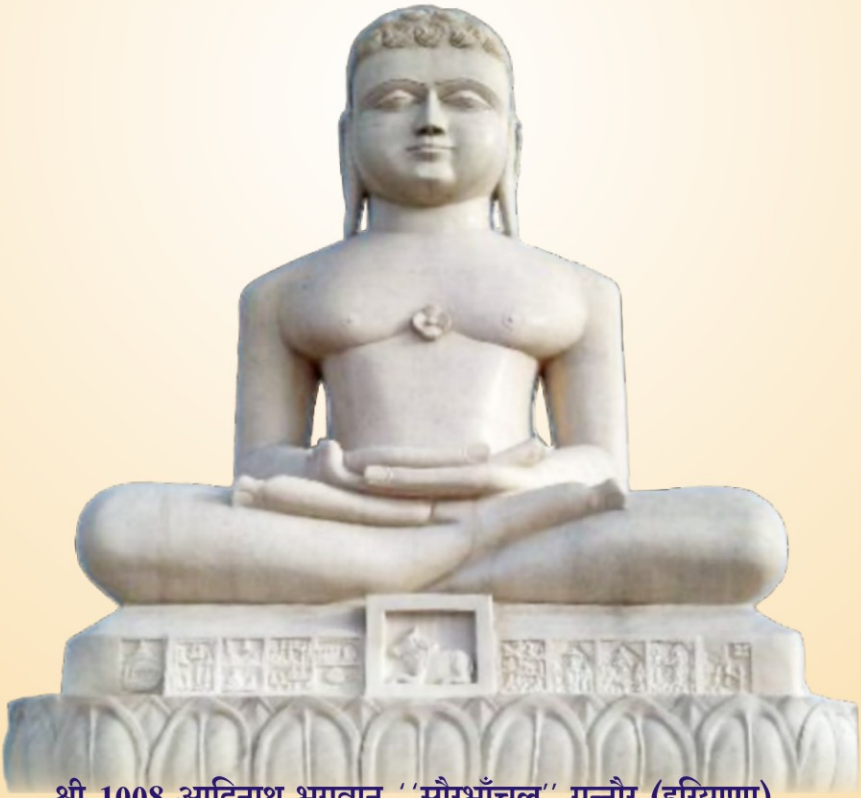

श्री 1008 आदिनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' गन्नौर (हरियाणा)

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
जीवन आशा हॉस्पिटल प्रणेता स्रोत
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी
महाराज